माधुर्य गिरा

।। माधुर्य गिरा ।।

स्वर्गीय श्री मधुसूदन राज़दान

वैकुण्ठपुष्प पब्लिकेशन्ज़
53 –बी, तीर्थ नगर तलाब तिलो
जम्मू

प्रथम संस्करण : 1000
© इस पुस्तक को कोई भी अंश किसी
भी रूप में प्रकाशक की अनुमति
के बिना कही भी मुद्रण न किया जाये।

लेज़र टाईप संटिग :
कॉमप्यूपिल कम्पयूटरस, शालामार रोड़, जम्मू
दूरभाष : 542562

मूल्य : 100 रु०

मुद्रक : दुर्गा प्रिन्टिंग प्रैस, पुराना जाम्मीपुर।
दूरभाष : 539863 / 533456

विषय–सूची

परिचय

दो शब्द

आमुख

प्राक्कथन

आतमग्यानुक शा'यिर

अध्याय – 'क' खण्ड

1) नटवर लाला वलो 1

2) त्राव संसार ब्युनये 3

3) परमदाम कोनय छख सोज़ा'नी 4

4) नन्दन करयो लोल पोशन मालय 7

5) ध्यान स्वर परमीश्वरनुये 9

6) वनतय भगवान कोनय आम 11

7) जय लक्षमी नारायण 14

8) आश में छम चा'निये 16

9) भगवान मेलखना अन्त समयन 17

10) ज़ीव छुय ओ'नुये 20

11) भगवानु करूम वोन्य या'रिये 22

12) सतु ग्वरु सार दुख 23

13) राधाकृष्ण पादन सर वन्दयना 26

14) सतु ग्वरु प्रसाद 28

15) आसिनय म्योन प्रणाम 31

16) बोज़ वनय श्री च़क्र 34

17) आम भू भवः 39

18) चन्द्र टे'च द्रामुच़ 41

19) बडि साहिबो यच़ 45

20) दिलरूबा यितु व्वन्य 47

21) छवन्यि मंज़ श्वन्य द्राव आबशारन 50
22) दि नज़र नेरान रीशम तार 54
23) लोलु सारगि चंग 56
24) व्वन्य यित सालु श्री कृष्णे 59
25) अल्फुय अवलाह सिरियि 61
26) हरे नाथ नारायण 66
27) वचि यन्द्रस पन तुलान लोलो 69
28) शाम स्वन्दरस जाम छती 78
29) कृष्ण भगवानस छि पोशि पूज़ा 79
30) प्यठ कालास मारवुन 81
31) डम डम डडम ढोल 83
32) हा मत्यो कत्यू 84
33) ओम् नमो नारायणाय 86

अध्याय – 'रव' खण्ड

1) कालु प्वरुशु क्याज़ि 89
2) ऋषि बालुक श्रवन 93
3) हनुमान राम जाम दुनथ 98

अध्याय – 'ग' खण्ड

1) रंग वोल साहब पानय 107
2) हा ता हू 109
3) हेलि द्राव पम्पोश 111
4) ज़ून तारकन मंज़ 113
5) अछि पोश छाव 116
6) यावन राय वस व्यन्य आय 117

#######

कुल वंश

गोत्र - स्वामिन गौतम

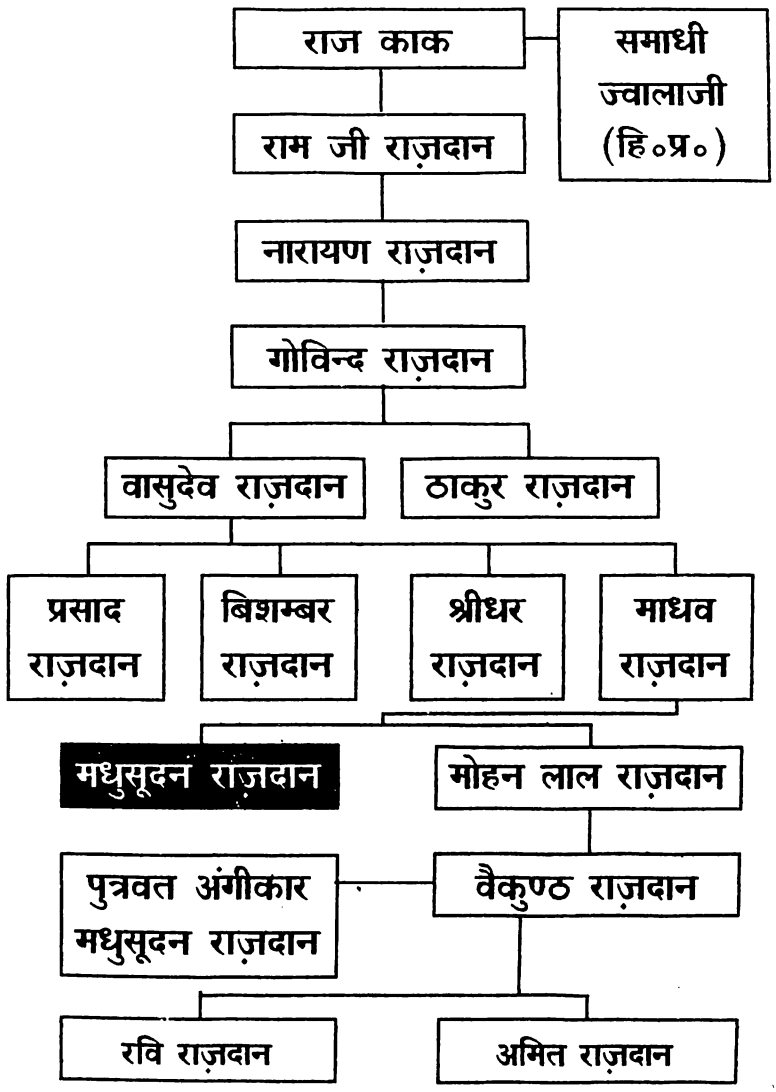

नागरी काऽशुर परनुक लेखनुक तऽरीक़ु

अ	=	अख, अछुर, अन, अथ, कर।
आ	=	आराम, आदथ, आचा़र, आशक।
अऽ	=	अऽछ (आंख), अऽट (गठजोड़), अऽन्य् (अंधी), अऽर (स्वस्थ), अऽस्य् (हम)।
आऽ	=	आऽस (मुख), आऽस्य (थे), राऽछ्य (राखी, रखवाला), आऽर (कुंडली, आलूबुखारा)।
इ	=	इनकार, इसरार, इशारुॅ, इन्सान।
ई	=	ईच़ (इतनी), ईद, ईमान, रीथ (नीति), गीत (गाना)।
उ	=	रुत (नेक, अच्छा), बुथ (मुख), ज़्युठ (जेष्ठ), बड़ा), सु (वह), कुस (क्रौन)।
ऊ	=	कूत (कितना), पूत (पुत्र), रूद (वर्षा), खूर (उस्तरा, एडी), क्रूर (कुआं)।
उॅ	=	चुॅ (तुम, तू), बुॅ (मैं), रुॅख (रेखा), चुॅख (आग लगाना), टुॅख (दौड़)।
ऊॅ	=	कूॅत्य (कितने), क्रूॅठ्य (कठिन, दुश्कर), सूॅत्य् (साथ)।
ए	=	रेल, एतिबार, मेल (मिलाप), ठेठ (खालिस), रेट (अनुपात), मेठ (चौधरी)।
ए'	=	मे' (मुझे), रे'ख (बीठ), रे'ह (ज्वाला), ने'ह (ऊंघ, निद्रास्थिति)।
ओ	=	चो़र (चार), तोर (उधर), खोस (प्याला), रोब (दबाव), चोर (हकलाने वाला)।
ओ'	=	छो़'ट (कम कद का), छूयो'ट (जूठा), लो'ट (दुम-पूंछ), नो'ट (घड़ा)।
अं	=	संग (साथ), ज़ंग (टांग), रंग, लंग (डाली-शाखा), नंगुॅ (नंगा)।

कवि का परिचय

स्वामी **मधुसूदन जी** का जन्म १६१२ ई॰ में नई सड़क श्रीनगर (जम्मू व काश्मीर) निवासी पं॰ माधव जुव राज़दान के घर हुआ। शिक्षा प्राप्ति हेतु आपको श्री प्रताप सिंह हाई स्कूल, अमीराकदल भेज दिया गया, जहां से आपने १६३४ ई॰ में मैंट्रिक की परीक्षा पास की। आप में वैराग्य की भावना को पनपते देख स्कूल की शिक्षा प्राप्ति के दौरान ही आपको सांसारिक बन्धनों में बांध दिया गया तथा आपका शुभ विवाह श्रीमति शोभावती जी से कर दिया गया। परन्तु देवइच्छा कुछ और ही थी, उन्हीं की इच्छानुसार आपकी धर्मपत्नी का देहाँत हो गया। इसके बाद १६३६ ई॰ में आप गिलगित स्काऊटस में लिपिक (कलर्क) के पद पर नियुक्त हुए। परन्तु गिलगित में मन न लगने के कारण १६४२ ई॰ में आपने इस पद को त्याग दियार। इसी बीच आपकी पूज्य माता जी श्रीमती पोशि कुजी का भी निधन हो गया। १६४६ ई॰ में आप फिर से आयुद्व डिप्पों जम्मू में नियुक्त हुए, जहां पर आपने १६६१ ई॰ तक अपने आपकों कार्यरत रखा। इसी बीच क्योंकि आप मे विरक्ति की भावना प्रगाढ़ हो गई। अन्ततः १६६१ में आपने इस पद से त्याग पत्र दे दिया। आप सदैव सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर कुछ खोजते रहते। अपनी इसी खोज में आप तुलमुला के रास्ते बाँडीपुर (काश्मीर) की और प्रस्थान कर गए व चित्रनार वन में निराहार तपस्या लीन रहे। तत् पश्चात् शारदाबल मन्दिर (कलूसा बाँडीपुर) में एक वर्ष तक योग साधना में मग्न रहे। १६६४ ई॰ से १६६८ ई॰ तक आप मास्टर विद्लाल कौल के घर पर रहे,

जहां आपने गहन अध्ययन की सांसारिक विषयों को लिपिवद्व करने हेतू कविता को अपनी माध्यम बनाया व कई महत्वपूर्ण कविताए लिखीं। १९६८ ई॰ में आपको पुनः घर वापिस लाया गया परन्तु क्योंकि आप वैराग्य की भावना से पूर्णतयः ओत प्रोत थे इसलिए शेष जीवन आपने शीर्ष साधु सन्तों से मेल मिलाप में ही व्यतीत किया और अन्ततः १४ नवम्बर, १९९९ (कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी) रात्रि आठ बजे अपने भौतिक शरीर को त्याग कर ब्रह्लीन हो गए।

आपके ही आर्शीवाद व भक्तजनों के सौजन्य से आज हम आपके द्वारा रचित कविता संग्रह को आंशिक रूप में **''माधुर्य गिरा''** नामक इस कविता संग्रह में प्रकाशित कर रहे हैं जो आपके महान व्यक्तित्व को समर्पित है।

मोहन लाल राज़दान

दो शब्द

डा ० कौशल्या वल्ली

मुझे स्वर्गीय स्वामी **मधुसूदन राज़दान** द्वारा रचित कश्मीरी में भजन को पढ़ने का सुअवसर मिला। भजनों की कृति का आरम्भ होता है - *''हमसा सूहम शब्द छु ऐला। नटवरलाल वलो।* ''सोऽहम्'' को उत्कृष्ट शब्द ठहराया है कवि ने, इस कविता में पाठक को रोज़ एक माला जपने को प्रेरित करता है[1]। जगत् का रक्षक अज्ञान की वायु को बन्द कर देता है - ऐसी अध्यात्म से ओतप्रेत कवि की भावना है। विषयों की वायु बन्द हो जाने से, इन्द्रियां निराली हो जाती है। मन प्रकाशित हो जायेगा। साधक ने दृढ़ संकल्प से एक रास्ता पकड़ना होता है।[2] मन से ऊपर बुद्धि है। बुद्धि सुक्ष्म है। ध्यान व स्मरण से समझने की बात है, इस असार संसार में जो उत्पन्न हुआ, उस का जाना भी निश्चित है। सूर्य हर दिशा को अपने उदय से प्रकाशित करके, अन्त में हर दिक् से अस्त हो कर सन्ध्या के दर्शन करवाता है।[3] समाधिस्थ साधक मस्त होते हैं, अध्यात्म के मार्ग में दूर पहुँच सकते हैं, ऊँचे उठते हैं। कवि तीनों जगत् के पालक को अनुग्रह की भिक्षा मांगते हैं। असम्प्रज्ञात समाधि में प्रतिष्ठित साधक अनुभव के आधार पर, अन्तर्यामी के संवाद को सुन कर झंझाल से संसार से मुक्त हो जाते हैं।

परम तत्त्व के दर्शन तुर्याविस्कर में होते हैं। परमशिव त्रिशूल लिये, नाभि में कमल विकसित होने का अनुभव भी होता है। कवि ने

---

1 अखहत आ'ठ छय मन की माला, प्रतिदिन करतु अख माला लो। अज्ञान वाव करि बन्द प्रतिपाला, नटवर लाला वलो (भजन : 1)

2 विषय वाव बन्द गव यन्द्रय न्यराला, दृढ़ बाव पख अख चाला लो। मनक मन प्रज़ली रंग गुलि लाल (भजन : 1)

3 मनस प्यठ ब्वद ज्ञान सूक्ष्म छु खाला, द्यान सुमरन फिर बाला लो (भजन : 1)

बीज शब्द ह्रीं श्रीं का प्रयोग किया है। सहस्रार में अनुभूति का संकेत है। कवि को ऊँकार के भी दर्शन हो जाते हैं। काल के जंजाल से कवि मुक्त हो जाते हैं, जीव भाव से मुक्त होकर आत्मस्थ हो जाते हैं कवि। तुर्यातीत अवस्था में वह विदेह मुक्त की अनुभूति करते हैं।

भजन दो में कवि साधक से बालकृष्ण की खोज करने को प्रेरित करते हैं।[1] संसार से अलग होने को कहते हैं। इस संसार को भ्रान्ति और जादूगरी समझते हैं, कवि। दोहराते हैं वाक्यांश - *''संसार से पृथक हो जाओ''*।

जगत् में लेना-देना केवल पाप का बोझ उठाना है। इस संसार में क्या प्राप्त करना है? संसार से अलग हो जायें। धर्म और अधर्म अलग-अलग है। धर्म को विवेक से अपनाओ। नहीं तो मूर्ख होकर विष खाना ही उपाय है। संसार को त्याग दें। यह संसार बहुत गहन है - मुँह खोले हुए सांप के समान। सत्संग वास्तविक मार्ग है। संसार को त्याग दें। संसार का माया जाल त्रिगुणात्मक है। ॐकार को अपना कर संसार-जाल को तहस-नहस कर। नाद बिन्दु को ध्यान से सुन, अजपा जप से दृढ़तापूर्वक सुन। श्यामसुन्दर के दर्शन होंगे। कवि निराकार में विश्वास रखते हैं। भजन तीन में कवि परमसत्ता को मातृ शक्ति के रूप में आवाहन करते हैं। कहते हैं - मैं दण्डवत प्रणाम भेजता हूँ। हे परमधाम मूर्त्ति आप मुझे क्षमा क्यों नहीं करती[2]। माँ तीन अक्षरों वाली त्रिपुरी त्रिब्रह्मवादिनी हैं, त्रिलोकी में सब को मोक्ष देने वाली है। तुम ऐसी जगह रहती हो जो आश्चर्य का स्थान है। दैत्यों और राक्षसों को मारने वाली, पाप शाप क्यों नहीं समाप्त करती हो। परम सत्ता त्रिपुरा, राज्ञा, ज्वाला, शारिका भवानी है, कवि उसे अनुरोध करता है, क्षमा करने के लिये। परमसत्ता अन्नपूर्णा, लक्ष्मी, चतुर्भुजा, वरदायिनी है, कालिका भवानी है, संसार सागर से कवि को क्यों नहीं तारती? कवि अधिकार से पूछते हैं।

---

1 बाल कृष्ण स द्यू वो'नये त्राव संसार ब्युनये (भजन : 2)

2 नमस्कार दन्डवत छुस ब सोज़ा'नी, परमदाम कोनय छख बखशा'नी (भजन : 3)

परमसत्ता को राज्ञा भवानी के रूप में याद कर, उन्हें बार-बार प्रार्थना करते हैं - क्षीर, खण्ड,बादाम खाने वाली माँ - मुझे क्षमा क्यों नहीं करती?

ज्वाला भगवती के चारों ओर बाहर सूर्य घूमते फिरते हैं, योगी लोग सूर्यावाहिनी के नाम से जिस को पुकारते हैं, कवि उसी मातृरूपा को कहते हैं कि अब उन्हें आवागम सहन नहीं होता, उन पर अब अनुग्रह कीजिये। कवि वन-वन में ढूंढ रहे हैं, *''स्थिर क्यों नहीं मुझे दिखाई देती। आप ऊपर, नीचे, चारों ओर घूम रही हैं। मुझे शम और दम जैसे गुण देकर नवाज़ो। मुझे क्षमा क्यों नहीं करती?''*

कवि परमसत्ता को शिवा, भवानी, रुद्राणी, रुक्मणी, राधिका, जानकी, स्वयंभू स्वरूप धारण करके, भकत के संकट दूर करने को कहते हैं, प्रार्थना करते हैं। कवि रोज़ मातृ चरणों की पूजा करते हैं। माँ को गुरू होकर शब्द देकर कृपा करने का अनुरोध करते हैं। माँ विन्ध्यावासिनी, कैलासवासिनी के रूप में स्मरण करके अर्चना करते हैं कि वह मधुसूदन पुरज़ोर प्रार्थना करते हैं कि उन का सब संकट दूर हो जाये तथा माँ के चरणों में प्रीति, निवास और शरणागति मिले।

भगवान् शङ्कर को प्रेम के पुष्पों की माला पहनाने के इच्छुक है[1] कवि। वह संसार को झूठ मानते हैं और परमेश्वर का ही ध्यान करना चाहते हैं। नहीं जानते कौन उन का अपना है, कहाँ से आये हैं, कहाँ जाना चाहिए[2]। वे कृष्ण का नाम दिन और रात जपते हैं, पूछते हैं, भगवान् क्यों नहीं आप मिलते उनको। कवि में भगवान् से मिलने की विलक्षण तड़प है। परमसत्ता को हर नाम से पुकारते हैं - जय जय शिवा, शिव, सीताराम, लक्ष्मी नारायण, राधेश्याम आदि[3]। दुःख, अस्वस्थता से तंग आकर, कवि परमेश्वर से कहते हैं कि उन्हीं पर विश्वास है,

---

1 नन्दन करयो लोल पोशन मालय लोलो, ही च़न्द्रशेखर कोर मे' च़े' सूत्य अज़ वाच़ बन्धन (भजन : 4)

2 दृश्य मातृ ज़गत अप़ज़ुय सोरय, ध्यान स्वर परमीश्वरनुये (भजन : 5)

3 जय जय शिवा शिव जय सीताराम, जय लक्षमी नारायण जय राधेश्याम (भजन : 7)

और किसी पर नहीं। वे अपने देह को पुराना - बहुत पुराना समझ कर, शरीर छोड़ने के समय, भगवान् से मिलने के लिए तड़पते हैं। दसवें भजन में निज अनुभव की ओर संकेत किये हैं। ज्ञानेन्द्रिय, महाभूत का बखान करते हैं।[1]

संसार चारों ओर से सारहीन है। कवि भगवान् से अनुग्रह करने के लिये प्रार्थना करते हैं। श्रीकृष्ण को गुरु मानते हैं। उन से भवसागर से पार करने के लिए प्रार्थना करते हैं[2]। माँ भवानी को सर्वेव्यापक मान कर, उन को प्रणाम करते हैं। श्रीचक्र की शोभा से आकृष्ट है। ओ३म् की परिभाषा कर, योगी बनने में सामर्थ्य न दिखा कर, भगवान् से प्रार्थना करते हैं, कि भक्त को तीन भुवनों से पार लगा दें। भक्त मन को जीतना शक्ति को प्राप्त करना मानते हैं। कवि ने पूर्ण शरण ली है, प्रभु के चरणों में। प्रभु के आने के लिए निस्सीम तड़प है। अपने आँसुओं से भक्त भगवान के चरणों को धोना चाहते हैं। प्रसिद्ध भजन - रामकृष्ण शङ्कर हरे मुरारी को अपनाते हैं, उन को याद करते हैं, हरि को नाथ समझ कर, नारायण, वासुदेव के नाम से पुन: याद करते हैं। कृष्ण के रूप में प्रभु की पुष्पों से पूजा करने के इच्छुक हैं। 'ओ३म् नमो ::ायणान्य कृष्णाय' जप करने से जपकर्त्ता गुलज़ार बन जाता है।[3]

'ख' भाग

'ख' भाग में तीन भजन हैं - पहला भजन काल पुरुष के बारे में है। दूसरा भजन ऋषि बालक श्रवण कुमार के बारे में है। तीसरा भजन हनुमान की भक्ति के विषय में है।

---

1 प्रेयम फम्ब चरक कड पन नेरि नोनुये (भजन : 10)

2 कृष्ण ग्वरदीव लगय पावि कमलन (भजन : 12)

3 ओम् नमो नारायणाय कृष्णाय, युस मन स्वरि सुय बनि गुलज़ार (भजन : 33)

'ग' भाग

'ग' भाग में छः भजन दिये गये हैं। पहला भजन कहता है कि परमेश्वर ही वास्तविक रंगने वाला है। रंग देने वाला, केवल एक निमित्त है।[1] दूसरे भजन में शैशव खोने का पछतावा है। तीसरे भजन में रचनाकार ने सुन्दर कमल कीचड़ में उत्पन्न हुआ देखा है।[2] भगवान को देखने का अधिकार मानते हैं। चौथा भजन चान्द के विषय में है। चन्द्रमा तारों में चमकता है। चन्द्रमा कहता है कि तारे कैसे चमकते हैं। चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश ग्रहण करता है। पांचवां भजन प्रभात होने के विषय में है। छठा भजन ईश्वर की सर्वव्यापकता के बारे में है।

निष्कर्षतः, उपर्युक्त भजनों का अति संक्षिप्त विवरण, भजन लिखने वाले की भक्ति, तड़प और मिलन के बारे में जतलाता है।

डॉ० कौशल्या वल्ली
20, राजेन्द्र नगर,
कनाल रोड़, जम्मू

दिनांक - 7.10.2001

---

1 रंगरो रंग चोन बहानय, रंग वोल साहिब छु पानय (ख भाग, भजन : 1)

2 हे'लि द्राव पम्पोश स्वन्दर फ्वलुमुतुये, रमज़ान मोतये वुछनय मे' (ख भाग, भजन : 3)

आमुख

भक्त कवि स्वर्गीय श्री **मधुसूदन जी राज़दान** का कश्मीर की सन्त परम्परा में उत्कृष्ट स्थान है। इन का कश्मीरी कविता–संग्रह **''माधुर्य गिरा''** भक्ति रस से ओत प्रोत रचना है जिस में कवि ने अपनी कला की यवनिका के पीछे छिपकर अपने व्यक्तित्व अपनी रूचि, जीवन सम्बन्धी मान्यताओं, ईश्वर के प्रति भक्ति भाव सांसारिक सुख की नश्वरता, दार्शनिक विचार–धारा तथा आध्यात्मिक ज्ञान का स्पष्ट परिचय दिया है। इस दृष्टि से इस व्यक्तित्व को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है अर्थात ईश्वर के प्रति भक्ति भाव तथा आध्यात्मिक ज्ञान। जहां तक ईश्वर के प्रति भक्ति भाव का सम्बन्ध है, **''माधुर्य गिरा''** में कवि के हृदय में ईश्वर प्रति भक्ति की अपूर्व तरलता विद्यमान है। उनका आध्यात्मिक ज्ञान तथा दार्शनिक विचार धारा भी भक्ति रस से समन्वित होकर काव्य के रूप में निःसृत हुआ है। उदाहरण दृष्टव्य है –

भजन **दीह द्वारिका गयि स्यठा प्रान्य वोन्य**
भगवान मेलखना अन्ति समयन
रज़तम गालिथ बनि ममतायि छैचन यि
वो'पदीश वो'नमुत मंज़ वीदन,मृग त्रेण्णा
चटिथ शांत बनि मन। भगवान मेलखना।।
इढा पिंगला छि द्वन तर्फन
सुषम्णायि वलिथ त्र्यगन्य चन
नाभिसथानस बनेमच़ द्रन।।

भजन ६ **कृष्ण-कृष्ण छुस ज़पान रात्रो द्यन तय**
वनतय भगवान कोनय आम
त्रेयि ताप ज़ोलनस संतापन तय

व्योद छुमनु कर्म फल पपिथ कुस आम
यिनस त गछ़नस छुम न छ़चैन बनन तय

भजन १० **प्रयम फम्ब चरक कड पन नेरि नो'नये**
ज़ीवॅ छुय औनुयॅ छुय नु बासान
यि पन त्रो'गना'विथ त्रन कर कुनुये
शिनमथ मावु लद त्रोगुन कर
नव गोन पन गव गायत्री बनिये।
ज़ीव छुय।।

स्वर्गीय श्री मधुसूदन जी की दार्शनिक विचार–धारा शैवमत बौद्धमत तथा सूफीमत से प्रभावित है। फलतः उनकी रचना त्रिवेणी संगम का प्रतीक है कवि इस संसार तथा सांसारिक विषयों को स्वप्न के समान मानते हैं जो अज्ञान रूपी निंद्रा से ज्ञान रूपी चक्षु के खुलते ही समाप्त हो जाते हैं यथा

भजन ११ **यति प्यठ थन प्योस अनह्यो'त सोरुय**
भगवान करूम व्यन्य या'रिये संसार
वुछमय छ़ो'च़ च्वपा'री
आश्चर्य छि माया राग रो'स रस
माज मोल बेनि बा'य सो'पनु वथ सोरुय
सूहम शब्द वोव ब्योल च्वपा'री
ग्वर वाक्य सूत्यन रा'छ क'रमस
भ्रकूटी मंज़ अछ़ ह्येलि द्राव सोरुय
गर्म ग्रख लज्य गोस पारम पा'री
मीम म्यचि़ सु गव पपित फल बस
दाल नून सोरुय धन यरवतिया'री

स्वर्गीय श्री मधुसूदन जी बौद्ध दर्शन की भांति जन्म एवं जीवन दुःख से समवेत मानते हैं अतएव इस दुःखात्मक संसार से छुटकारा पाना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिये –

भजन २ **बाल कृष्णस द्यू वोनये त्राव संसार ब्युनये**
ज़गतस मंज़ ह्योन त द्योनये
पापन हंज़ बा'र खार
नत वनत ज़ीव क्याह छु ख्योनये
यि माया ज़ाल त्रे गुनये
त्रे गुण आ'सिथ छोनये
च़टिथ छ़न ज़ाल रटिथ ओमये
नाद ब्यन्दस थाव कनये
अज़पाय सूत्य वार खार
शाम सुन्दर नेरि नो'नये

अतएव प्रस्तुत कविता संग्रह ईश्वर क़े प्रति भक्ति, आध्यात्मिक ज्ञान तथा दार्शनिक विचार धारा का अपूर्व भण्डार है परन्तु खेद इस बात का है कि यह अपूर्व कृति अभी तक अप्रकाशित रूप में रहने के कारण जनसाधारन तक नहीं पहुँच पाई है।

डा॰ सत्यभामा राज़दान
संस्कृत विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय
जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर

प्राक्कथन

कश्मीर प्राचीनकाल से ऋषियों, मुनियों, साधुओं, आचार्यों तथा संतों का प्रधान केन्द्र रह चुका है। इसमें समय समय पर ऐसे संत पैदा हुए जिन्होंने अपनी अमर रचनाओं से जनसाधारण को सही दिशा देकर उसका पथ प्रदर्शन किया। ये संत प्रत्येक युग में राजनीति से तटस्थ रहकर जनता को भारतीय संस्कृति के मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराते रहते हैं। अहिंसा, भाईचारा, प्रेम, सहनशीलता, समता, शिवता तथा शांति का संदेश देने वाले इन्हीं सन्तों में से आध्यात्मिक चेतना को स्पन्दित करने वाले स्व॰ मधुसूदन राज़दान का नाम कश्मीरी भक्ति साहित्य में प्रमुख रहा है। आपके कश्मीरी कविता संग्रह का नाम "माधुर्यगिरा" है। जो उर्दू में लिखा गया हैं इसमें संस्कृत शब्दावली के अतिरिक्त अरबी तथा फारसी के शब्द प्रचुर रूप में मिलते है। भाषाओं की विधिता से यह रचना पाठकों को इन्द्रधनुष की तरह आकृष्ट करती है। इस रचना से प्रभावित होकर मैं ने सबसे पहले कश्मीरी "शीराज़ा" में इस कवि का जीवन–परिचय आदि विस्तृत रूप से लिखा जो १९८७ ई॰ के मई–जून अंक में प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त जम्मू व कश्मीर कल्चरल अकाडेमी द्वारा प्रकाशित साहित्य के विशेषांक में कश्मीरी साहित्य तथा यूरोप के शोधकर्ता

इस शोधात्मक लेख में मैं ने हिन्दी भाषा में इसका उल्लेख किया है जिससे हिन्दी पाठकों को इस संत कवि के विषय में जानकारी होगी।

यहां पर यह कीना असंगत न होगा कि 'तारख माल' कार्यक्रम के अंतर्गत सन् १९८२ ई॰ में श्रीनगर दूरदर्शन केन्द्र से इस के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का प्रसारण किया गया। इस वर्ष यह रचना देवनगरी लिपि के माध्यम से जनसाधरण तक पहुचने के लिए प्रकाशित की गई है। इसके प्रकाशन में कवि के सुपुत्र श्री वैकुण्ठ जी का प्रयास सराहनीय हैं । मुझे आशा है कि इस रचना से पाठक लाभान्वित होंगे।

आपका
डा॰ बदरी नाथ कल्ला
एम.ए.एम.ओ.एल.शास्त्री, बी.एड.,
पी.एच.डी. (संस्कृत)
पूर्व संस्कृत प्राध्यापक
म.ए.अ.के.कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर, कश्मीर
राष्ट्रपति पुरस्कार सम्मानित

आतमग्यानुक शा'यिर –

मदसूदन राज़दान

– डा॰ रतन तलाशी

आतम ग्यानुच तु दयिलोलुच शा'यरी हुंज र्यवायथ छे' सानि ज़बा'न्य मंज़ वारयाह प्रा'न्य। ललि प्यठु मदसूदन राज़दानस ताम छे' मुखतलिफ ग्वनमातव शारु तजरुबन हुंज़ यि वथ पनन्यव सिरसा'व्य खयालव सूत्य शोलना'वमुच़। मदसूदन छु अमि वति हुंद्य वतु प'द्य तथ दोरस मंज़ मां'डान यथ दोरस मंज़ ग्वड़ु सा'न्य तखलीक–कार समा'जी हकीकत पंसदी हुंद हुलबाख तुलान रूद्य तु पतु जदीद मिज़ाज़स तहत प्रज़नच हुंदिस ज़वालस खुर कासान कासान पननि व्यंदुकिस कावुशुपिस मंज़ बन्द गयि मगर मदसूदन रुद संसारकिस त'तिस म'तिस नारस निश लो'ब। त'म्य मोज़ नु संसारी ज़िन्दगी हुंदिस लहलहावस हालांकि सु ति ओस हसास। तस ति आ'स्य तिम सवाल गतु–ग्यूर तुलान यिम सवाल तसुंद्यन हमअसरन तुलान आ'स्य। याने इनसा'नी ज़िंदगी हुंद मकसद, इनसानी वो'जूदक मसलु तु ज़िंदगी तु मोतुक लगातार सिलसिलु बेतरि'यिमय सवाल आ'स्य केंह सदी ब्रोंह ललि ति बुथि मसलन –

अछ्यन आय तु गछुन गछे
पकुन गछे द्यन क्यो राथ
योरय आय तूरय गछुन गछे
केंह नतु केंह नतु केंह नतु क्याह ।।

मदसूदनस ति छु येमि संसारुक छो'रुय अतुगथ
वुछिथ वो'बूदर व्यथान तु तवय छु सुति वनान।

द्रश्य मात्र ज़गत अपुज़ुय सोरुय
आस कति गछ़ को'त कुस छुम सोरुय।।

अमापो'ज़ यथ संसारस मंज़ पननि आसनुक अरुथ छ़ारुन ओस तस निश ति ग्वडु ग्वडु अनि गटि मज़ं दोरु दोरु करनस बराबर यथ मंज़ दबन तु द्रुस्यन हुंद कवी इमकान ति ओस। मगर सु ओस पय पुरदु। तस ओस बिहिथ ज़ि

दारनायि च़ोंग ज़ाल पय ननि सोरुय

अवय दिच़ तम्य ति मनु सो'दरस मंज़ डुंग, यिथ पा'ठय तसुंद्य हमअसर जदीद शोयिर दिवान आ'स्य। मगर तिमन ओस बेप'छी तु तशकीक तु तिमन ओस मंज़िल रोवमुत। येमिस ओस मंज़िल व्यो'द तु वथ पता। सु च़ाव पननि मनुकिस बागुबरस तु लो'ग वो'जूदुक्य छ़ायि ह'ल्य गाशिरावनि। तम्य प्रज़नोव पनुन आसुन तु पननि वोजूदुच हकीकथ करुन सरु तु अदु वो'नुन बशाशतु सान -

सुबुह फो'ल प्रबाथहो आव
अछ्ठ पोश छाव, अछ्ठ पोश छाव

मदसूदन छु अमी आतमग्यानकि मेठि तु क्रेठि सफरुक हालअवहाल इज़हारकिस सोथरिस प्यठ अननु बापथ मनज़ूम ज़बा'न्य हुंद दामानु रटान। तु हरगाह अस्य वनव ज़ि सु छुनु शार वननुकि मकसद शार वनान गलत गछ़ि नु। पज़र छु यि ज़ि पुनुन रूहानी गुदरन तु बनुन बावुन छु तसनिश बावतुक मूली मकसद। रुत शार वननस छ तस निश सानवी हेस्ययथ। यि छु सही ज़ि पननि रूहानी तजरुबक इज़हार करनु विज़ि छु तम्य कुनि कनि खूबसरत शारु ज़बा'न्य हुंद वरताव को'रमुत तु पननिस इज़हारस छुन यिछ़न जायन अख अलग रंग खोरमुत। यि यो'दवय कम कलीलुय छु मगर योहय अलग रंग छु तस

ताम वातुन आम नफर् सुंदि बापथ मुशकिल बनान। इबहामुच यि त्राय छे योग, गायत्रय मनतुर तु तनतुर क्यो यंत्रन सूत्य वाबसतु मोज़ूवन मंज़टाकार्। यिछ़न जायन छे अददन हुंदि अलामती वरतावुच व्वसुद्रवस। बाज़े छे यि अददन सूत्य ग्युंद ग्युंद करनुंच ज़्यहनी अमल शो'वूरी बासान तु बाज़े छु यिति महसूस सपदान ज़ि मदसूदन छु छरा स्वंता सुखाय बापथ शार बावान। मगर तस छु यि इमतियाज़ ति हा'सिल ज़ि सु छु संगीत क्यव वसीलय सूत्य पनुन्य कलपना साकार करान। संगीत छु तसुंदि रूहा'नी तजरुबन हुंद दुनिया। सु येलि ज़ा'न्य समंदरस मंज़ व'सिथ लीन सपदान छु तस ब्रोंहकनि छे फितरत, पज़ुरुक साकार रूप तु पननि मनुच दशा संगीतची बाज़याफ बनान मसलन

डम डम डडम डोल वायानु लोलो
बाराग्य अगूचर दमालु लोलो
ग्वडु र्‌वनि गडिंथ भोगलु लोलो
छ्‌वन्य वज़ान बयंकर बेचालु लोलो।।

तसनिश छे फितरतुच कांहति अमल संगीतमय -

र्‌वनि हुंद शब्द छुय गछ़ान श्वन्य-श्वन्य
छ्‌वनि मंज़ श्वन्य द्राव आबशारन।।

पान प्रज़नावनुचि अमलि मंज़ कांह ठो'र ति छु तस निश अमि संगीत लयि हुंद खललपज़ीर सपदुन -

ज़्यव तु अथु बे'ह्वस ब्यगुर अज़ साज़
दिलरुबा यितु व्वन्य म. सा'कर नाज़
अख हथ तु आ'ठ छय तारु नवाज़
शब्द क्या नेरान बे अंदाज़।।

मदसूदनुन गूड संसक्रत लहजि छु यि कथ अयान करान ज़ि तस छु भारती आध्यातमक नागरादन हुंज़ जान ज़ान तु सु छुनु सा'मी नागरादव निश ति बेज़ान। तु पननिस कलामस मंज़

का'शिरिस शार् अदबस मंज अख तवजुतलब ग्वनमाथ बनावान। मसलन दिह यात्रायि हुंदि हा'रान करवुनि सफरुक तसवुर त केंहनस मंज़ रा'विथ केंहन मंज़य क्याहताम व्वपदनुक यि अकायल नज़रियि यिथ पा'ठ्य ठोस पयकरस मंज़ बावुन छु पज़ी मदसूदननि बाव'च़ बलुक का'यिल करान वुछिव ।

विचि यंदरस पन तुलानु लोलो
योहय हाल दीहस बनानु लोलो
डींज म्वकलिथ शुन्य गछ़ानु लोलो
शुनि मज़ं नो'व व्वपदानु लोलो।

यिथ्य हिव्य केंह तजरुबु बावनु बापथ छु अ'मिस निश तमसीली अंदाज़ु यसलु पा'ठ्य नज़रि गछ़ान। तु युथ अंदाजि बयान छु बाज़े ब्यशूंक्य पाठ्य असि परमानन्द ति याद पावान। तसुज़ि ''करमु बूमिकायि'' नज़मि हुन्द्य पाठ्य छे मदसूदनस निश ति केंह मिसालु यिमन मंज़ यि वो'जूदक्य वीह तु आध्यातमक सफरुक्य मखतलिफ पड़ाव रोज़ मर्रु ज़िन्दगी हुद्यन मोरुज़न हुंदि द'स्य बयान करान छु। ''र्वनि हुंद शब्द छुय गछ़ान'' तु ''ज़ीव छुय ओ'नये'' बेतरि छे यिछ़ जान मिसालु।

मदसूदनस छु तरकीब बंदी हुंद जान फन। मसलन द्यह दारिका, रूगु गगुर, प्रेमु फम्ब बेतरि छे तिम तरकीबु यिमन मंज़ अख लफ़ुज़ अकायल छु तु ब्याख ठोस। तरकीब बंदी ज़रियि छु सु असि पनुन बोवमुत खयाल छरा चे़ननु बजायि ह्यसव द'स्य ब्रोंहकनि वुछनावान। मसलन -

''यि दारिका छे र'टमुच़ रूग गगरन''
प्रेम फम्ब चरकु कड़ पन नेरि नो'नये।

मदसूदनस छु बाज़े स्यठाह सनिरस ताम ग'छ़िथ इबहामुक गटाशुत पा'दु करान। यिथ्यन मोकन प्यठ छु तसुज़ि कलपनायि

छु सु मोज़ूकि फलसफियानु तनोजुर् मता'बिक ज़बान वरतावान। मगर तसुंद टोठ लहजि छु संसक्रती। अमि किन्य छु बाज़ तसुंद लहजु गा'रमोरूफ ति बन्योमुत तु अथ मंज छु कुनि कुनि लय छरा "लोलो" सूत्य पुशरावनु आमुच़ ति बासान। मगर सु येलि आम लहजि वरतावान छु शारुच लय छे ज़न्तु लफज़व मंज़य वुज़ान। मसलन -

अख गुल थोवमुत मंज़ गुलदानस
क्रशनु भगवानस छे पोशि पूज़ा।।

मदसूदन छु बाजे़ दो'यम्यन शा'यिरन हुंज़ लयि ज़मीन या वोज़ निसरु ति वरतावान। मसलन विछिव -

ही चन्द्रशेखर को'र मेचे़ सूॅत्य वाच़बंदन
नन्दन बु करयो लोलु पोशन मालय लोलो

तु वेशनु राज़दानुन्य यि लीला -

त्रुज़गत पालो तनु आ'सी संतान व्यदन
नदन बु करयो लोलु पोशन मालय लोलो।।

बहरहाल मदसूदन राज़दान छु अख दयि बखुत्य तु आम अदबी रवि निशदूर रुज़िथ पननि मनकिस आनन्दस मंज़ लीन ओसमुत अमि सबु हरगाह तसुजिं ज़बा'न्य या लफज़ वरतावस मंज कांह फहर्यर छुति सु छु दरगुज़र करुन तु क'शरि शा'यिरी यिस म्वलुल ब'रच़र त'म्य अदद अलाम'च़व तु संगीत पयकरव सूॅत्य को'रमुत छु त'थ्य पज़ि ललुखो'ल करुन।

डा० रतन तलाशी
कशमीरी विभाग
कशमीर यूनीवरसिटी
हज़रतबल, श्रीनगर

आभार

"माधुर्य गिरा" नामक कविता संग्रह पांच भागों में कवि द्वारा रचा गया। किन्तु कश्मीर से पलायन करते समय कुछ कविताऐं ही हाथ लगी जिन्हें इस संग्रह में तीन खण्डों में विभाजित किया है। प्रथम खण्ड में उन कविताओं को रखा गया है जिनमें कवि नें हिन्दी व संस्कृत भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। द्वितीय खण्ड में पौराणिक कथाओं को कविता में प्रस्तुत किया है और अन्ततः तृतीय भाग में उन कविताओं को संग्रहीत किया गया जिनमें कवि ने उर्दू व फारसी भाषा की शब्दावली का प्रयोग किया है।

सम्पादकीय भूमिका निभाते हुए मैं डा० श्रीमति कौशल्या वल्ली के प्रति अपने श्रद्धा भाव प्रकट करता हूँ जिन्होने मुद्रण से पूर्व प्रस्तुत कविता संग्रह का न केवल अध्ययन किया बल्कि गहन मन्थन के पश्चात् अपने विचारों को इस संग्रह के प्रति प्रकट किया। डा० बदरी नाथ कल्ला के प्रति भी मैं कृतज्ञ भाव प्रकट करता हूँ जिन्होनें समय समय पर रेडियो व टी. वी. के कई कार्यक्रमों में इस कविता संग्रह का उल्लेख किया। डा० रत्न लाल तलाशी का इस कविता संग्रह को प्रकाशित करने में अमूल्य योग दान है उनके समक्ष श्रद्धा भाव प्रकट कर रहा है।

मुझे श्री राजेन्द्र तिक्कू जी के प्रति भी आभार व्यक्त करना है जिनके नेतृत्व में श्री मनोहर ने इस संग्रह के मुख्य पृष्ट की परिकल्पना की।

मैं भगिनी डा० श्रीमति सत्यमामा राज़दान का भी आभारी हूँ जिन्होनें समय समय पर मुझे बहुमूल्य सुझाव दिए व इस कविता संग्रह को प्रकाशित करवाने हेतु मुझे प्रेरित भी किया।

अन्त में मैं श्री टी. के. रैणा, श्री सतीश कल्ला, ऐ. के. शर्मा, श्री काशीनाथ कौल, सुशील भटट्, रमेश छट्टू, नंदीप बख्शी, श्री संजय राज़दान को भी धन्यवाद देना अपना फर्ज़ समझता हूँ जिन्होने इस कविता संग्रह को प्रकाशित करवाने में प्रत्यक्षा अथवा अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग प्रदान किया।

वैकुण्ठ राज़दान

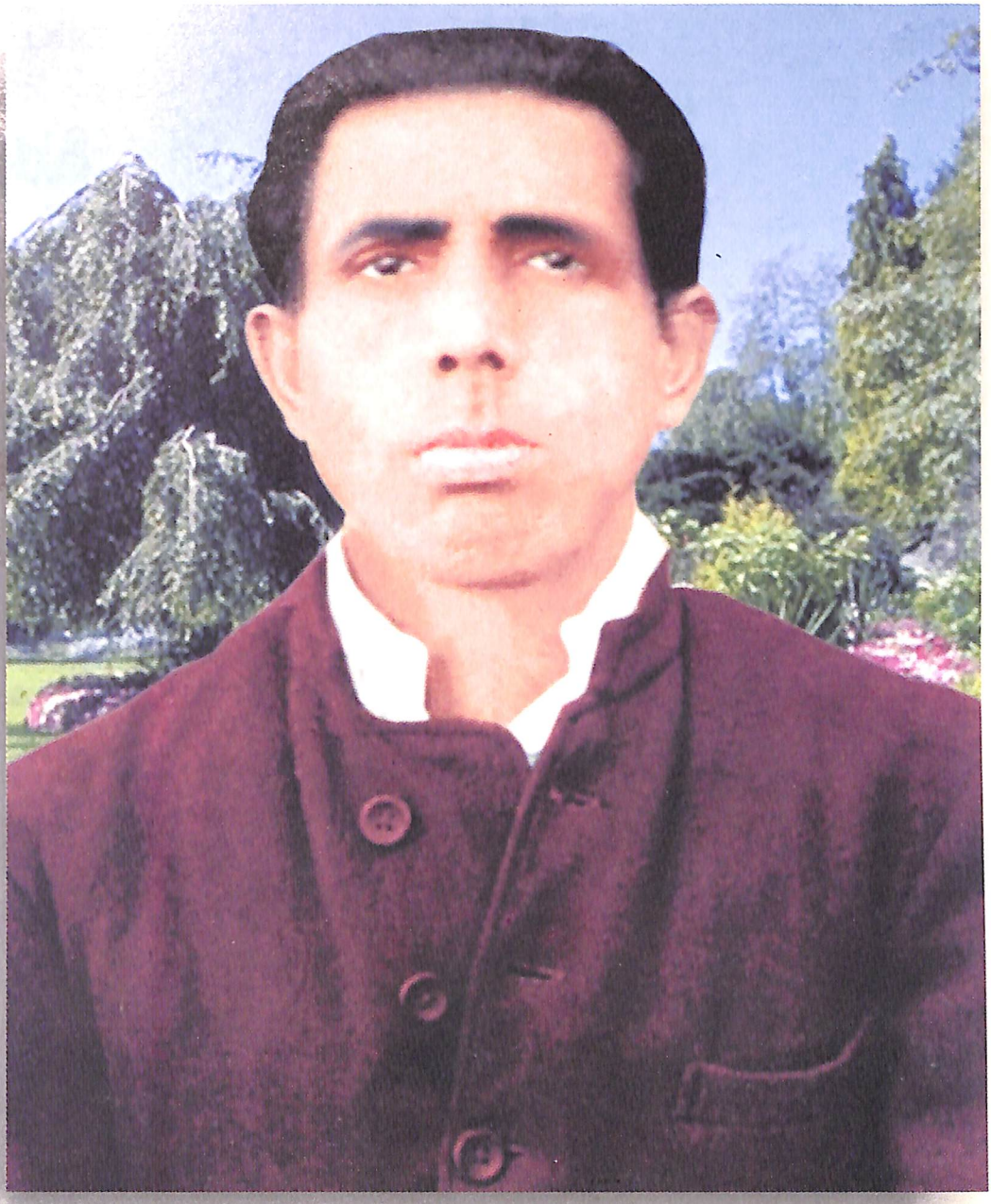

स्वर्गीय स्वामी मधुसूदन राज़दान

कार्यकाल के दौरान

1912-1969

'क' खण्ड

भजन न॰ 1

हमसा सूहम शब्द छु ऐला।
नटवर लाला वलो।।

1) अखहत आ'ठ छय मनकी माला
प्रतिदिन करत अख माला लो
अज्ञान वाव करि बन्द प्रति पाला
नटवर लाला----------।।

2) विषय वावु बन्द गव यन्द्रिय निराला
दृडु बावु पख अख चाला लो
मनक मन प्रज़ली रंगि गुलि लाला
नटवर लाला ---------।।

3) मनस प्यठ ब्वद ज़ान सूक्ष्म छु खाला
द्यानु सुमरन फिर बाला लो
सोर छुनु बालु बाव शाम होने वाला
नटवर लाला ---------।।

4) द्यानु दारनायि अथि छुन पुर माला
ज़ीरबमस रज़ चार लाला वलो
अपानुक हूम कर प्राण दियि ताला
नटवर लाला ---------।।

5) समाद फेरि शब्द नेरि चतु मस प्याला
व्वथ दूर खस बाल्य बाला लो
अनुग्रह करतम त्रिज़गत पाला
नटवर लाला ---------।।

6) असंप्रग्यात लब वुछ दीपु माला
अनुबवु प्रज़नाव वरनमाला लो
संवाद बोज़ छ़ैनि सोर झंझाला
नटवर लाला ---------।।

7) परम त्वथ वुछ तुर्यायि मंज़ लाला
परमशिव दारिथ त्रिशूला लो
पदुमु नाबि पम्पोश द्रामुत विशाला
नटवर लाला ---------।।

8) अ'त्यी रोज़ बाकय छि वुनि अख छ़ाला
सहस्रडल सरज़ कपाला लो
अथ्य मंज छु हीं श्री दा'रिथ वन माला
नटवर लाला ---------।।

9) ओंकार प्रखट्यव च़ज कालन्य ज़ाला
ज़ीवु बाव छल मदलाला लो
चोरि पदि तरिथ वल तु दुशाला
नटवर लाला ---------।।

भजन नं० 2

बाल कृष्णस द्यू वोनये त्राव संसार ब्यौनुये।
यि संसार छुय ब्रम त बा'ज़्यगार त्राव संसार ब्यौनुये।।

1) ज़गतस मंज़ ह्यो'न त द्योनुये
पापन हुंज़ बार खार
नतु वनतु ज़ीवु क्याह छु ख्यौनुये
त्राव संसार ----------।।

2) दरुमादरुम ब्यौन ब्यौनुये
व्य'ज़ पूर्वक वारु च़ार
नत मूड़ छुय ज़ाहर ख्यौनुये
त्राव संसार ----------।।

4) यि संसार छुय स्यठा सौनुये
आ'स मुच़रिथ शाहमार
सथसंगु छय वथ ननिये
त्राव संसार ----------।।

5) यि माया ज़ाल त्रै गौनुये
त्रे ग्वन आसिथ छौनुये
च'टिथ छ़न ज़ाल र'टिथ ओ'मुये
त्राव संसार ----------।।

6) नादुब्यन्दसुय थव कनुये
अज़पायि सूत्य वारु खार
शामसोंन्दर नेरि नो'नुये
त्राव संसार ----------।।

7) मीम गव मद दाल द्वन्दुये
सीनु शांथ वाव बनि वोन्य
मद अंहकार दालु सूत्य दो'द
नो'न निराकार वौनये
त्राव संसार ----------।।

भजन न० 3

नमस्कार दन्डुवत छुस ब सोज़'नी।
परमदाम कोनय छरव बरवश'नी।।

1) त्रे अखयरी त्रपुरी त्रिब्रह्मवादिनी
त्रिलौकी सारी मूख्य दायनी
आशचर थानस छरव रोज़ानी
परमदाम कोनय -------।।

2) त्रे कारण दा'रिथ छिय चे़ आसानी
आशच़र थम क्याह छि शूबानी
दैत्यन तु राख्युसप छख मारा'नी
पाफ शाफ कोनय छख गालानी
परमदाम कोनय ------।।

3) त्रेयि सर त्रैसरा छख च़ रमबुवा'नी
सरस सर हैरि बोनु जोडानी
राग्यन्या त ज़ाला शारिका बवानी
परमदाम कोनय -------।।

4) हृदयस यनु छुय ढेकि इंदुदा'री
रक्ताक्षि नीलु वर्णु मालेनी
अस्त्र त शस्त्र छख च़ दार'ानी
परमदाम कोनय -------।।

5) वस्तुर चै़ नालि छिय गुलि अना'री
हमस पदुम सिंह सवा'रिये
पंच म्वख पदुमासन कंठ गामी
परमधाम कोनय -------।।

6) हंसा शयनी अनुपुर्णायी
लक्ष्मी च़तुरभुज़ा वरदायी
सिंह वाहन चे़ छुय कालिका बवानी
बवसरु कोनय छख मै तारा'नी
परमदाम कोनय -------।।

7) तुलिमुलि नाग चोन राग्या बवानी
परबतु रोज़वन्य वनु हारी
खिरु खण्ड बादाम कन्द आह'ारी
सनुमोखु कोनय छखव मे बासा'नी
परमदाम कोनय ------।।

8) बालादरि छखव बिहिथ ज़ाला'यी
बाह सूर्य अन्द्य अन्द्य फेरा'नी
यूगी वनान छिय सूर्यवाहिनी
युन गछुन छुसनय वोन्य बु चालानी
परमदाम कोनय -------।।

9) वनु वनु फेरान वन्य चै दिवा'नी
स्थिर कोनय छखव मे बासा'नी
हेरि बोनु फेरान छखव चु चोपा'री
शम दम कोनय छुखव में बखुशानी
परमदाम कोनय -------।।

10) शिवा बवानी बेयि रुद्रा'नी
रोखॅमनी रादिका जानकी
स्वयंभू स्वरूपा रूप धारेनी
संकट कोनय छखव में हारा'नी
परमदाम कोनय -------।।

11) मंज़ीर पादन न्यथ बु पूज़ानी
छोन्यि दार रोन्य क्याह छि वज़ानी
ग्वर शब्द टोठतम मा'ज राजिरा'नी
व्यनुती कोनय छखव मे बोज़ानी
परमदाम कोनय ------।।

12) विन्ध्य वासिनी कैलास वासिनी
नव हायनी कासतम में खारी
मधुसूदन छुय आमुत ज़ारपारी
परमदाम कोनय -------।।

भजन न० 4

ही चन्द्रशेखर कोर मे' चे़ सूत्य अज़ वाचु बन्दन।
नन्दन करयो लोल पोशन मालय लोलो।।

1) बोज़तम सदाशिव आरकोत छुस कोरमुत ब वन्दन
तफ छुम खोतमुत फ्युर दिय दिय प्रान्यन जन्दन
त्रेयि तापु दो'दुमुत छम न सूरथ दन्दन त बन्दन
नन्दन करयो लोल ------।।

2) दह छिम दुशमन अ'किस खोत अ'क्य रोटमुत ब फन्दन
प्रारनस न फुरसथ काल प्रारान असन त गिन्दन
ओरुत ब गोमुत जाय दिम तल चरनार ब्यनदन
नन्दन करयो लोल ------।।

3) मूड़ु बाव प्रबाव ज़ांह थोवमय न मे चोन बन्दन
तारु किथु तरुयो ये'लि वुछुम हरनाम न चन्दन
दिम तार भवसरु नीलकण्ठो कलु चै़ ब वन्दन
नन्दन करयो लोल ------।।

4) मन दुर्योधन तम्बुलोवनस गरदन ज़दन
विष विष मस चोम नेन्द्रि पोवनस सोज़ गोम बदन
ही शिव शंकर ज़ार बोज़तम क्याज़ि छुस वदन
नन्दन करयो लोल------।।

5) अंग ह्यून ब गोमुत वति पकनस लूख छिम ह्यडन
ही गंगाघर अनजान छुस किथ बनि स्पन्दन
रंग रंग रंग गोम हर रंगय गोमुत में खंड़न
नन्दन करयो लोल ------।।

6) मा'ल्य माजि रोछनस हा'ल करहम नाबदस त कंदन
बेनि बाय बान्धव यि छु सरबसत प्रोन सम्बन्धन
कर्मफल येलि सोरि तेलि वनव वन्य वन्य छु च़न्दन
नन्दन करयो लोल-----।।

7) कामनायि यावुन याम गलन बस गछि जंदन
यावुन छु रावुन मद वोलनय श्री रामचन्दन
छ़ारान चे़ शंकर थप दिवान कंडयन त ज़ंडन
नन्दन करयो लोल -----।।

8) वृद्ध बाव द्वदुर चाम हीय रंगस गोमुत मे कुन्दन
कुन्दन युस बेनि अन्तकालु क्याह लगि तस दन्दन
काल गव न्यराश शिव भक्ती करमुच़ छि कुन्दन
नन्दन करयो लोल -----।।

9) ही अमरनाथो सत्बाव येलि गोंड प्रहलादन
नार थमु मंज़ द्राख हिरयकश्यपस ती ओसलादन
सत व्रथ ह्यथ रोज़ मधुसूदन वुनि छुय आदन
नन्दन करयो लोल -----।।

भजन न० 5

दृश्य मातृ ज़गत अपज़ुय सोरय ध्यान स्वर परमीश्वरनुये।
आस कति गछ़ कोत कुस छुम सोरुय।।

1) अनिगटि मंज़ छुस करान दोरु दोरय
दब लोगुम बुथ फुटुम सोरये
दारनायि चोंग ज़ाल पय ननि सोरुय
ध्यान स्वर परमीश्वरनुये----।।

2) नवदन नोमु रस याद पाव सोरुय
तिम रस यैमि दितिय सुय छु सोरुय
कल कर ओमस त ग्यान बनि सोरुय
ध्यान स्वर परमीश्वरनुये ---।।

3) शमु दमऽ यमऽ नियम बुत रोच़ बोरुय
लोच़राव वारु वारु सोरुये
मद अंहकार त्राव तारह तर अपोरुय
ध्यान स्वर परमोश्वरनुये- - - - ।।

4) अनाश्रत कर्मु सूत्य भ्रम च़लि सोरुय
उपकार सूत्य पपि फल सोरुय
यतन कर लूब त्राव मायि मोंद सोरुय
ध्यान स्वर परमोश्वरनुये- - - - ।।

5) गरबस मंज़ यिथ ग्रहण गोम सोरुय
माजि ज़्यथ क्याह कोरुम गोरये
आस कति गछु कोत कुस छुम सोरुय
ध्यान स्वर परमोश्वरनुये- - - - ।।

6) मीम दाल सीन वाव यलि गलि सोरुय
दाल दन त्यलि बनि सोरये
नून सूत्य मचुराव बरन्यन तोरुय
ध्यान स्वर परमोश्वरनुये- - - - ।।

भजन न० 6

कृष्ण कृष्ण छुस ज़पान रात्रो द्यन तय।
वनतय भगवान कोनय आम।।

1) त्रेयि तापु ज़ोलनस संतापन तयं
व्योद छुमनऽ कर्म फल पपिथ कुस आम
यिनस त गछनस छुम न छयन बननतय
वनतय भगवान --------।।

2) कोर आदि शक्ति शासन अविनाशन तय
म्यच पोन्य नार बाद बनोवुन तमाम
न्यरलीफ वासुदेव श्री निरन्ज़न तय
वनतय भगवान --------।।

3) स्वनसुन्द अण्ड गव तैयार शनरयतन तय
आठ खण्ड च्वदाह भूम बनोवुन तमाम
यूगमायायि सूत्य अकार द्राव नोन तय
वनतय भगवान --------।।

4) अकार ब्रह्म रूप प्रसिद्ध काल ज़न तय
सृष्टी बना'वुन आमो इमाम
कर्म फल सारिनय ब्योन ब्योन करुन तय
वनतय भगवान --------।।

5) उकार अजनमा पालना करण तय
दीह द्वारिकायि मंज़ करिथ छु कयाम
विष्णुरूप ब'खत्यन अथ रोट करन तय
वनतय भगवान --------।।

6) शिव रूप मकार संहार करवुन तय
कल्याण रूपस करहोस प्रणाम
त्रेयि रूपु अक्यसुंज़ नाम सुमरन तय
वनतय भगवान --------।।

7) नाशवान यि दिह ज़ान म कर अबिमान तय
छि माया व्वपा'दी रोज़ ने'शकाम
मंज़ बाग रूज़िथ च़ठ बन्दन तय
वनतय भगवान --------।।

8) आदि अंत छुस न केंह मज़य द्राव नोन तय
यछ़ायि आक्रमन कोर शहर गाम
अन्दु कनि रूज़िथ छु मंज़ नच़न तय
वनतय भगवान --------।।

9) गरि गरि पूज़ कर ग्वर च़रनन तय
नित्य नियमु करतो प्राणायाम
यमि नियम सूत्य बनि छ्यन पापन तय
वनतय भगवान --------।।

10) भक्ती छि मुक्ती म्वखतस पन तय
भक्ति हीनस छुनुह ज़ाँह ति विश्राम
त्रमु रोस म्वखतु युथ मालि निश ब्योन तय
वनतय भगवान --------।।

11) ब्रोंठु पतु अथु रो'ट छुनु कांह करन तय
बयि छुम गछ्येम मा मन्दिन्यन शाम
शामु रूपु भगवान नेरि ना नोन तय
वनतय भगवान --------।।

12) छोट वनुन मोट यि बोज़ दीह छु नशवुन तय
कर्म खेत सम्बालनस स्यठाह थोद दाम
व'निथ ग'यि साद संत बेयि ब्रेह्मण तय
वनतय भगवान --------।।

13) अन्द रोज़ मंज़ बाग छुख आनन्दगनतय
निश्चीतन रोज़ स्वनस कर त्राम
आशि पाशि च़ठ व्वन्य मधुसूदन तय
वनतय भगवान --------।।

भजन न॰ 7

जय जय शिवा शिव जय सीताराम।
जय लक्षमी नारायण जय राधेश्याम।।

1) सत्याय्वग सत्य रूप द्वापर छु राम
त्रेता कृष्ण जी बेयि सत्य नाराण
च़्वान य्वगन चो़रि रूप श्री भगवान
जय लक्षमी नारायण - - - - - ।।

2) च़तुर्दल गजुम्वरव गणेश छुस नाम
चतुरम्वरव ब्रह्मा छु वीद वरवनान
शत्रुधन भरत जी लक्षमण तु राम
जय लक्षमी नारायण - - - - - ।।

3) षठदल षठम्वरव कुमारजी नाम
श्ये अक्षर ओम् नाभिस्थान वनान
चो़र, श्ये, दह, बाह, शुराह छु चोन थान
जय लक्षमी नारायण - - - - - ।।

4) आ'ठ प्रकर'च़ अष्ट भैरवन प्रणाम
देशायि आठ अष्टाश्वर्य वनान
अ'ाठ दल विशेषनु शैवी ननान
जय लक्षमी नारायण - - - - ।।

5) दश द्यखपाल छु दहन, हतुक दाम
दशदल कृष्ण छुख शूबायमान
दह त अख छु सोरुय रौद्रगण बनान
जय लक्षमी नारायण -----।।

6) बाह बुर्ज़ मीष व्रेश इत्यादि नाम
द्वादश दल निर्मल स्वबाव ज़ान
सँऽकराँच़ छि बाह बाह सिरियि प्रज़लान
जय लक्षमी नारायण -----।।

7) पम्पोश शुराह दल आज्ञा शिखर नाम
यूगी छि अति शम तु दम करान
शिव शम्भू बोज़ तार छय वज़ान
जय लक्षमी नारायण -----।।

8) न्यूर न्यूर परव दुदल परमदाम
शिवनाथ प्रारान शेवायि सान
मदलाल वद म बनि सोरुय सामान
जय लक्षमी नारायण------।।

भजन न० 8

छुस दवखव दादद्यव ब चोटमुत।
आश छि करतम या'रिये।
कांह चे रोस व्वञ छुम न रोटमुत।
आश में छम व्वन्य चा'निये।।

1) ज़्यूठ छु सौदराह क्रूठ मंज़िल प्योम
मटि छि पापन्य बा'रिये
छुस परेशान किथ बन्यम तार
आश में छम ---------।।

2) मोह स्यन्दि मंज़ छुस ब फोटमुत
छुस गोमुत व्वजा'रिये
कंडि ज़ालन ज़ोरु रोटमुत
आश में छम ---------।।

3) नावि ह'ांज़ कमि हालु दियि तार
क्याज़ि चन्द छुम ख़ा'लिये
अन्दुकार छुम अथि छम न हार
आश में छम --------।।

4) यावनस गोम पादु नबु नार
बुजुरस न ह्यकनक्यि बा'रिये
चार करतम छुम न कांह सार
आश में छम ---------।।

5) बुज़ुरस व्वन्य मान्दु गोमुत
संकल्प विकल्प जा'रिये
छुम वुन्योमुत छम न सुमरथ
आश में छम --------।।

6) ऐ ना खुदा! क्याह ज़ाल बनोवुथ
गाड़ि हन्दि अमा'रिये
क्याह चे़ लाब छुय गाड़ फसावित्थ
आश में छम --------।।

7) हे निरंजन यीतनय आर
मदलाल करान छुय ज़ा'रिये
नतु मार्यस कालु शाहमार
रज़ ह्यथ करान इन्तिज़ारिये
आश में छम --------।।

भजन न० 9

दीह द्वारिका गयि स्यठा प्रा'न्य व्वन्य।
भगवान मेलखना मे' अन्ति समयन।।

1) यि द्वारिका छि रटमच़ रूग गगरन
श्रेष्मागार युथ न व्वथि क्रख व्वन्य
श्वन्य श्वन्य छुम गछान कनु ग्वगुलन
भगवान मेलखना ------।।

2) ब किथ पा'ठ्य रटु यिमन नवन द्वारन
प्राण अपान व्यान फेरन हेरि बोन
समान न उदान छि मंज़ यन्द्रियन
भगवान मेलखना ------।।

3) स्थूल कारण सूक्षम कोरुन ब्योन
ज़ानान छुस न केंह क्याह कर व्वन्य
त्र्यशनायि को'रनस रंगु रिवन
भगवान मेलखना ------।।

4) स्नान ध्यान प्राण अपान पवन
शम दम यम नियम यन्द्रिय दमन
करि युस मन प्रावि श्वद सतूग्वण
भगवान मेलखना ------।।

5) रज़तम गालिथ बनि ममतायि छ्यन
यि व्वपुदीश वोनतुम छु मंज़ वीदन
मृगु त्रैशना च'टिथ शांत बनि मन
भगवान मेलखना ------।।

6) इढा पिंगला छि द्वन तरफन
सुषम्णायि वलिथ त्र्यगन्य चन
नाभिसथानस बनेमच द्रन
भगवान मेलखना ------।।

7) रीच़क पूरक बरवुन पवन
क्वम्बकु सूत्य पाकनावुन द्रन
द्रन यलि प्वरव्त गछि अद फ्वलि मन
भगवान मेलखना ------।।

8) मन फो'लि कन थाव नादुबिन्दन
समतायि शो'मरिथ बूद न्यन्द्रियन
दृढ़ भाव वैराग्य करूख ग्रेसन
भगवान मेलखना ------।।

9) जाय प्वखतु गछि़ लार अचि़ गगरन
दारि बर मुच़र फेर च़्वन तरफन
शांत शाँ'ती अदु प्रारू व्वन्य
भगवान मेलखना ------।।

10) सूहम शब्द ब्रह्म सुय गारुन
मछि कछि रूप युस छु म्वकलावन
वाख वानियन सूत्य पानु बोलन
भगवान मेलखना ------।।

11) अन्त्यदान क्याह करि अन्ति समयन
येम्य न रौट ब्रोंठु प्यठु सु नारायण
करि युस ज़नमु ज़नमादिकन छ़येन
भगवान मेलखना ------।।

12) ओरु योर कौत गछुन मंज़ जंगलन
सत् ग्वर प्रसाद यलि बनि पूरन
भक्ति बावुनायि यियि मधसूदन
भगवान मेलखना ------।।

भजन न० 10

प्रेयमु फम्ब चरकु कड पन नेरि नो'नुये।
ज़ीव छुय औनुये छुय बु बासान।।

1) यि पन त्रोगना'विथ त्रन कर कुनुये
शिनमथ मावु लद त्रोगुन कर
नव गोन पन गव गायत्री बनिये
ज़ीव छुय ओ'नुये ------।।

2) त्रेयि लरि पन येर त्रगौन बनिये
ब्रह्मा विष्णु माहीश्रवर
गायत्री सावित्री सरस्वती छि नालिये
ज़ीव छुय ओ'नुये ------।।

3) त्रेकारण खसि वसि दौगुन्य बनिये
शठ अरव्यर द्राव तति अमृत सर
इढा पिंगला सुप्मना वज़िये
ज़ीव छुय ओ'नुये ------।।

4) पांछ प्राण पांचि म्वख गायत्री बनिये
ज़ीपश्वर बनान छिय यूगीश्वर
दुसतथ नाडी पांछ प्राण वनिये
ज़ीव छुय ओ'नुये ------।।

5) अष्ट प्रकरचु दपान छिय पांछ यन्द्रिय
सत्य ह्यथस मनब्वद बे'यि अहंकार
ईख्व बनिथ आकाश सकाश करवुनुये
ज़ीव छुय ओ'नुये ------।।

6) पांछ गयि स्पर्श पांछ ज्ञान यन्द्रिय
षठ अख्यर नाव चोन बनान ओंकार
चोवुह महाभूत सांख्यन व'निये
ज़ीव छुय ओ'नये ------।।

7) महाभूत परव्याग वीदन वनिये
दुसतथ शांच़ गायत्री संस्कार
दुसतथ चोवुह जुनार बनिये
ज़ीव छुय ओ'नुये ------।।

8) यूगियव योहय भूग भूगिथ वौनुये
मधुसूदन छुय सर्व आधिकार
बनि ज्ञान प्रसाद यलि शखती बनिये
ज़ीव छुय ओ'नुये ------।।

भजन न० 11

यति प्यठु थनु प्योस अनह्यो'त सोरुय।
भगवानु करुम वोन्य यारिये।।

1) संसार वुछमय दोच़ च्वपा'री
आश्च़र छि माया रागु रो'स रस
मा'ज मोल बेनि बोय सौपुनु वथ सोरुय।।

2) ह्यनरस मंज़ बाग कीठ क्यन्ज छि सा'रय
ज़ीव छि बन्येमत्य अथि मंज़ मस
परम राग त्रोवुम भ्रम रस सोरुय।।

3) काम क्रूध लूब मूह मद येम्य गोलुय
आत्मुच प्रतिमा प्रज़ली तस
नो़न द्राव परम शैव शक्ति वोलुय।।

4) शक्ति छि सा'रय शिव सुन्द लोलुय
लोल छुम होल च़लि कल वन्दसय
भाव किन्य अर्पन शरीर करु सोरुय।।

5) इढा त पिंगला कोंडलिनी छि गोलय
त्रैगनि त्रे वर सर्प म्वख तस
शिन्यि मंज़ छवन्य द्राव सिरियि रमबोलय।।

6) सूहम शब्द वोव. ब्योल च्वपा'री
ग्वर् वाक्य् सूत्यन रा'छ करमस
भ्रकुटी मंज़ अछ़ हयेलि द्राव सोरुय।।

7) गर्म ग्रख लज्य गोस पारम पा'री
मीम् म्येचि़ सु गव पपित फल बस
दाल. नून सोरुय धन यखतिय'री।।

भजन न० 12

श्रीकृष्ण् ग्वर्दीव् लगय पादि कमलन।
सत् ग्वर् सार छुख दित् व्वन्य मे तार।।

1) गरि गरि पूज़ा करान छुस ब चरनन
दण्डवत बोज़तम करान छुस पुकार
यच़ काल वोतुम प्रारान त गारान
सत् ग्वर् सार ---------।।

2) चे़ बगा'र वात् को'त प्रबल छु अज्ञान
धैर्य दिम सूत्य यिम कोन. छुयचे़ आर
भवसागरस मँज़ छुस प्योमुत पथर।।
सत् ग्वर् सार ---------।।

3) सूख्यम निश ब्योन करिथ बना'व मुच़ छय चे़ कन्य
मायायि थनि य'च़ मे' वोलुम अन्दुकार
वतु हावख म्यानि कर मे भवसर पार
सतु ग्वरु सार --------।।

4) मायायि थनि को'र मे' कायायि कन्य चून
थन्य ख्यनु चानि आव गूपियन प्रकाश
यहा'य थन्य मे ख्यावतम और क्या है दरकार
सतु ग्वरु सार --------।।

5) थन्य छकरावनुक नट्य फुटरावनुक
अभिप्राय दिवान मायायि थनि नार
खैन्य थन्य द्रायि सा'र कँसस गव सम्हार
सतु ग्वरु सार --------।।

6) ध्यानु मूल रठ यि सार पूज़ायि पद्म पाद
ज्ञान मूल ग्वरु वाक्यु ज़गत आधार
म्वखती टवदवय छय बकार गुरू दार
सतु ग्वरु सार --------।।

7) अज्ञान अन्धकार ने'त्रन छु गुबार
दूर गछि़ येमि सूत्य सुय न्यर विकार
श्री कृष्णस प्रणाम श्री ग्वरस नमस्कार
सतु ग्वरु सार --------।।

8) अख अख थनि थफ गूपियन सफल ज़फ
वरि श्रीकृष्णन दोपहस अथ दार
यादव त माधव आव तिमन साख्यात कार
सतु ग्वरु सार --------।।

9) गूपियव नियि गथ वसुदेव नन्द पथ
राधायि आव बकार पनुन व्यवहार
वासुदीव नन्दगूर आ'सि अपरम पार
सतु ग्वरु सार --------।।

10) परमानन्द व्वन्दु मुच़रिथ हावय
सतुबावु हृदयस क्याह गोम व्यकार
कर दया वलु वुछ पतु ब्रोंठ आर पार
सतु ग्वरु सार --------।।

11) अथ यिथिस व्यकारस दवा छु दीदार
औषध छि मुरलीगद मधुदार
मधुसूदन थावतन यी च़्यय निरविकार
सतु ग्वरु सार --------।।

भजन न० 13

राधा कृष्ण पादन सर वन्दयना यारय अतीरोज़ अभिलाष मनस छुम यूरय् अनथ सालय अती रोज़।।

1) यच़ कोल बेमार पोशि किथु बे'यन
ओन. कति करु गोरु खोज़
श्री श्याम ज़ीठ छम बे'करारी
येम्य कोर में दिलस सोज़।।
राधाकृष्ण पादन ------।।

2) हालि दिल वनय ब. क्या मे' गोमुत
वल यूरय कथा बोज़
प्रेयम ज़जरि चानि ज़खुम मे करिमुत्य
दिलदार दवा सोज़।।
राधाकृष्ण पादन ------।।

3) वेषयुक सोदरा छ़ाल छु मारान
थावान न काँह सोज़ बोज़
वनु हारि अथ मंज़ तन छि नावान
क्या वनय कर्म सँजोग।।
राधाकृष्ण पादन ------।।

4) वुज़मल नारुत्रट. छा किनु तूफान
खोच़नस कुस मे' दिल जोय
ब्यमारिद्राव छुस अथ मँज़ रोज़ान
पा'रि लगय खबरि यितम रोज़।।

राधाकृष्ण पादन ------।।

5) यिन चानि ज़ख्मन दोद बलिहेम
ल्वतिहेम कर्मय बोर
मस्तानु बे परवाय भगवानु
दवा छु दीदार सोज़।।

राधाकृष्ण पादन ------।।

6) दीदार चाने बेमार बलय
दितमो ज़ा'निथ अर्ज़न
मधुसूदनस यी छु मनस
वर्धायक मान पो.ज़।।

राधाकृष्ण पादन -------।।

भजन न० 14

ज़ल गव स्यठा ठंड शिठ्योमुत मन।
सतु ग्वरु प्रसाद सूत्य गछ़ान टिम टम।
यि ह,बाऽ छुय शँखस त घँटायि ग्वन
च़ो'तुर ब्वज़ द्यू कन यिमन नादन
सतु ग्वरु प्रसाद --------।।

1) शिशर गाँट छि मागस पोहस बनान
येलि शीनप्येनि छय खसान गुन्यन
युथ न ख्यख तिमव सूत्य छि च़ास यिवन
सतु ग्वरु प्रसाद --------।।

2) मोह तू'र अद वस ह्यरि व्वन्य ब्वन
दुरमु करमु बावु लिव कुठ्यन त व्वट्यन
शुद्ध भावनाय हुन्द करत. बूज़न
सतु ग्वरु प्रसाद --------।।

3) श्रान त्राव बुथ म छल वुशनि पान्यन
वाव लगि तू'र खसि दँद टक्करन
बिहिथ ख्यथ श्वंग त्राव कर फ्वन्य फ्वन्य
सतु ग्वरु प्रसाद --------।।

4) शान्त श्रदायि कर व्यवहार व्वन्य
क्रयि विक्रयि सूत्य सोम्बराव धन
योहय तासीर छा कामि कारन
सतु ग्वरु प्रसाद- - - - - - - - ।।

5) ओरु योर फीरिथ कर निष्कल मन
वुद्यूगा करिथ व्वथ अर्ध रातन
तफ ज़फ त्राव पथर कर मनन
सतु ग्वरु प्रसाद - - - - - - - ।।

6) यन्द्रिय निरोदु सूत्य वुशनाव तन
शीन गलि पोन्य गछि शिशर गाँटन
मागु पतु. करि फाल्गुन उद्यूगन
सतु ग्वरु प्रसाद - - - - - - - ।।

7) म्वख होव बहारन त. शिवरात्रन
कमु न्याम'च़ दिवान ख्यत्रपालन
अथ वनान शुर रछिन्य तु ग्हस्त ग्वन
सतु ग्वरु प्रसाद - - - - - - - ।।

8) छ़ल ग्हस्त बाव दितु अज़पायि कन
गुल फ्वलन चित्रस तु दार आसन
ख्वश गवार हवा छु करान श्वन्य श्वन्य
सतु ग्वरु प्रसाद - - - - - - - ।।

9) बादामन फुलय लज्य बेयि चेरन
तुल. फल्य ख्यतु ग्वडु तुलु कुल्यन
गरमु ग्रकि सूत्य अद. फ्वलि चोन मन
सतु ग्वरु प्रसाद -------।।

10) हरदु वाव. फोलुरावि पम्पोशन
अन्तर बाहर खुलि हन हन
डलु हा'ज़ छि सोम्बरान हिलि ताँत्रन
सतु ग्वरु प्रसाद -------।।

11) पम्पोश बुम्बु-पोश बेयि जुवरन
ति प्रयोग करिथ बनि क्या सतन सरन
सतवय त्राविथ त्रन दित छ्यन
सतु ग्वरु प्रसाद-------।।

12) मन प्राण ज़ान नाव तन सो'तूग्वन
सो'तूग्वन छु श्वन्य श्वन्य श्री निरञ्ज़न
निरञ्ज़न छु व्यापक शक्तिपातजन
सतु ग्वरु प्रसादु -------।।

13) प्रखटान लोल चयन नवन नदीयन
व्यापकतायि फल दिवान कर्मन
नवि नव पथर त्राव सतुग्वर रटुन
सतु ग्वरु प्रसाद -------।।

14) हरुद लो.ग अथि रठ त्याग तबर
त्रेग्वनु न्या'मि कुल्य ह्यख च़ थल.न्य
बाछि सोम्बरिथ हडरस थव व्वन्य
सतु ग्वरु प्रसाद -------।।

15) गुर्य गुपन वा'ति नीरि प्यठन
फल त गासु रछिथ थाव तिमन
वन्दु वोत. गछ़तु. व्वन्य न्यरवासन
सतु ग्वरु प्रसाद -------।।

16) भक्ति भाव दारिथ चे़' अन्त समयन
शाक्ति दिन वोल छु मधुसूदन
ओम् शब्द साधनायि प्राण हरितन
सतु ग्वरु प्रसाद -------।।

भजन न० 15

सर्व व्यापक मऽजि भवानी ।
आसिनय म्योन प्रणाम ।।

1) आदि कर्ता पापु हर्ता तापहन शत्रु नाशनम ।
शेरि मुकटा रक्त वस्त्र अथन शस्त्र धारनाम ।
ने'त्र कमल क्या छि ज़ोतान
खसिथ सवारि छख व्याग्रम ।।

2) पादिकमलव पद्म युगलव
ज़ीर दिचथ महिशासुरान ।
मंज़ीर छ्वन्यु ज़्यूनमुत
छु मन छुय चे श्री महारुद्रम ।
चन्ड त म्वन्ड यिम दय त दानव
रटिथ चोथक रुद्रम ।।

3) दीव सिन्धु दीन बन्धु पूज़हथ निज मन्दिरम् ।
ज़गतमाता इष्ट दाता छख च माता गणेश्वरम् ।
पूज़यि ग्वड़ु गनिशिबल वातु.
द्वारपाल यति गणेश्व्रम ।।

4) आदि दीवस गछ़ शरण अति
अथ वनान गणेशमन्दिरम ।
चतुरदलु मंज़ नागबल छि वथ
योद प्रसन्न बनि विनायकम ।
गणेश आ'ग्यन्यायि वति वति
नेर शीषिनाग वुछ भयंकरम ।।

5) भयि सूत्यन युथ न खोचख यि
छु ममतायन चटन ।
स्यद त ब्वद हयव अछ़ अन्दर
दाम लभुम अति सुन्दरम ।
मूषकु मनु वीर बो.ज़ सूत्य कर कोमल हनहन ।।

6) कर मंगल ज़ालिथ जंगल
वुछ.त क्युथ सोन. मन्दिरम ।
श्री च़क्रस अन्दि अन्दि फेर
तेलि अदु प्राव वुपशम ।
नाग बल वुछ तु. क्याह छु चमकन
बखत्य ज़न छि मूक्ष प्रावन ।।

7) हेरि ब्वन दवन ईक ब'निथय
वुज़मल क्याह छि ज़ोतान ।
प्रज़लवुन तारामंडल ओम् ही श्रीं हूम् फ्राम ।
नाना वर्ण छुस प्रत्यक्ष वुछान
फाम् आम् शाम् शारिकाम् ।।

8) अमि नागुक प्रवाह वुछत चक्रीश्वरस छु वातान ।
नव दरवाजु बन्द करनु सूत्य ज़ल
अर्द्ध गत छु प्रावान ।
त्रेयव नदियव क्षीर सागरस प्रावन जल दाराम ।।

9) परज़नाव आगुर छु ब्रोंठ कनि
दमु दमु पख च़लि भ्रम ।
मोह जंगलस नार लगन श्वद शेंकुर छु ग्रेज़न ।
पाँ छूलन वारु दितु कन कति गव अन्तः पुरम ।।

10) नव दुर्गा सिंह आरूड बिहिथ प्यठ भ्रमरन्द्रिम ।
चन्द्रकला सम्पूर्ण राज्ञा भवानी विष्णु धाम ।
त्राहिमाम त्वम त्राहिमाम त्वम
सर्व व्यापक चन्डिकाम ।।

11) डेयक़ु टिक़ु के अलुरनु सूत्य
यम बयि छि दूर सपदान ।
मधुसूदन शरण छु आमुत आठ
एर्शवय दिस तमाम ।
नतु वनतु माजि क्या छु सामानयमि
सूत्य बनि न्यरवान ।

भजन न० 16

बोज़ वनय श्री च़खर क्या छु शूबानी ।
पोशि पूज़ करय राजु रा'निये ।

1) गणपत कुमार जी ब्रह्मा सरस्वती ।
विष्णु शिवय शिव रा'निये ।
च़ोर द्वार दीवु थल क्याछि नूरा'नी ।।

2) च़ोन कूनन च़ोर दीव छि रोज़ा'नी ।
च़ोर च़ाख शुराह आसा'निये ।
चोर दोगुन्य आठ नारि च़खुर ज़ोता'नी ।।

3) चोर आठ दोयत्रह आठ पद त्रना'ली ।
अर्ध नारीश्वर ठहरा'निये ।
दोयत्रह त्रान शुनमथ सथ सो'न पा'वी ।।

4) चोर नालि कर्निका पम्पोश नेरा'नी ।
चखुर श्री सर खसा'निये ।
ब्रह्म विष्णाद्यक यिम छि मूल प्राणी ।।

5) चोर द्वार यारबल्य शुनमथ साम चानी ।
सेन्दि ज़ल अन्दु फेरानिये ।
ज़ हथ पाद बालि वथ स्यंग स्यमाहनी ।।

6) ब्रह्मस गायत्री विष्णु विष्ण'वी ।
शिवस गौरी अंर्धागीये ।
अद्रनारीश्वरस जूलु जूला'नी ।।

7) द्यग्म्बर पीतम्बर छि गिरदु फेरा'नी ।
सो.दु ब्रोर ब्वदु ब्रोर नचा'निये ।
चोन द्वारन छि यिम राछदर बसा'नी ।।

8) अगन वरुण वायु बेयि इशा'नी ।
दीवगन सारी रोज़ानिये ।
त्रेयि नालि अति छिय भैख बसा'नी ।।

9) त्रेयि प्यठु सति साम बाल फेरा'नी ।
वर्ण मालायि ज़ोता'निये ।
सिरियि चन्द्रमु ध्रुव अगस्त रोज़ा'नी ।।

10) वर्णु माला यथ तारख दपा'नी ।
तारा मण्डल छु शोला'निये ।
च़्वन वखतन चो़र रूप बदला'नी ।।

11) यम त काल बजि डेडि छि डीड्यवा'नी ।
नालि न्यबर तिम छि फेरा'नीये ।
चानिस हुकुमस आदीन छि रोज़ा'नी ।।

12) योहय आकार अस्य तुलमुलि वुछा'नी ।
पर्बत च़'क्रस खसानिये ।
हारि रूप रहबर कलाय दिवा'नी ।।

13) बगलामुखी ज़्वाला त राग्यन्या ।
रक्त शीत अम्बर दारा'निये ।
साढु त्रै पटल बोज़ पाँछ तव रवा'नी ।।

14) अन्तर्मुखी शाम वर्ण शामरा'नी ।
अर्ध ब्यन्द च़न्द्रम शूबा'निये ।
व्यन पोश हियि पोश च़न्दन त क्वन्गदा'नी।।

15) नाफु गुरूचन अर्कु अम्बर फिशा'नी ।
त्रपसी लता बासा'निये ।
ब्यल पोश मादल गुलाब लागा'नी ।।

16) द्यख विजय वर अभय माल धारेनी ।
जय विजय शब्द नेरा'निये ।
च़न्द्र मुकटस सिरियि छेतुर खसा'नी ।

17) डोलि चानि अ'न्ध अ'न्ध च्रक फेरा'नी ।
सास अलम ज़ुचु त्रावा'निये ।
बाह अंगुल शूडश दल ह्योर जीला'नी ।।

18) द्वादशान्त मण्डल वति बेयि फे'रानी ।
खीरु सरु अथु बुथ छला'निये ।
रातस हृदि मंज़ छुय ताबा'नी ।।

19) अष्ट कून आठन जायन फे'रानी ।
द्वद रतनदीप आलवानिये ।
पम्पोश पोशव नाग छु पूज़'ानी ।।

20) मन्दर चोन जूल ज़ाँऽपान अ'लुर'ानी ।
शिन्य त आकाश क्रशानिये ।
विष्णु पादन नाग रूप ज़ल वुज़ा'नी ।।

21) आठ त्रे नाल छी मूल गंज़रा'नी ।
अ'ाठ त चोर द्वादशांत मंडल दारा'निये ।
आकाश सिरियि वोथ अति छु रोज़ा'नी ।।

22) यम त काल त्र'ाविथ गणिशिबल वाता'नी ।
गणेश ह्योर कुमार रोज़'ानिये ।
कुमारस ह्योर गृह मंडल वाता'नी ।।

23) गृह मंडल ह्योर कुन दीव छि रोज़ा'नी ।
आ'ठ नालि चरकु फेरा'निये ।
आ'ठि नालि अ'न्दुरय् छय मात्रा चा'नी ।।

24) वाडवा अ'गुन मोखस मंज़ यज्ञ करा'नी ।
कन्द नाबद आपर'ानिये ।
नागुबल क्षीर खण्ड लूख खारा'नी ।।

25) जूलस च'ानिस दीव छि पूज़ा'नी ।
पोश गुलदान था'वानिये ।
अष्टांग पूज़ क'रिथ दण्डवत करा'नी ।।

26) पांछ अ'गुन अन्द्य-अन्द्य छिय चे' दज़ा'नी।
स्वाहा हूम बोज़ानिये ।
ज़्वाला लय त ज्वाला बेयि मालेनी ।।

27) प्रदिक्षण् हतन हन्द्य हथ छि दिवा'नी ।
साड त्रे' वीद शिव वनानिये ।
यम तु काल प्रदिक्ष्णस छिनु पोशा'नी ।।

28) साडि त्रे'यि गुरदीव पानु वाता'नी ।
गुरु वाक्य पानु वनानिये ।
ग्वरय छु सोरुय रव रवा'नी ।।

29) भक्ति भाव बेखत्यन पूर पूर'ानी ।
कौम्बक रीचक प्रज़लानिये ।
तमि नूरु मधुसूदन छु नूरा'नी ।।

भजन न० 17

ओम भू भवः स्वः साधनायि अज़पा ।
चेतस गनतम सम्पूर्ण ।।

1) अनाहत नोम दीष आनन्द लक्षिनव,
सूत्य क्या बनोवुथ परिपूर्ण ।
आत्मबूद चोन रूप अमरयथ नो'टा,
शब्द ब्रह्म रूप किन्य प्रत्यक्षबासन ।
चन वा'ल्य चवान ति वुछित ब क्रेशान,
चावतम बनावतम आनन्दगन ।।

2) अकार वुकार मकार त. ओमकार
करहव तमि कुय ग्वन गायन ।
यूगी अभ्या'सी न्यद्य द्यासन सूत्य,
प्राण पवन दारा न्यथ छि वुछन ।
नय छुस ब यूगी नय अभ्या'सी,
चोन नाव तारिना त्रन भवनन ।।

3) बो'ज़वान यात्री तुलमुल छि वसन,
नागस च'ानिस दिवान प्रदिक्षण ।
नेत्य नेयम कर्पूर धूप दीप रत्नदीप,
क्षीर खण्ड नाबद करान अर्पण ।
ब कोताह निर्दन बेयि निश्चीतन,
क्याज़ि वोतुस नय चानि थापनायन ।।

4) अ'ठम नवम दोह पननि पूज़ायि प्यठ,
व्वद्यम दिवान छख भाग्यवानन ।
जयकार सत्कार तिमय छि त्रावन,
यिम चानि भक्ति भाव ओश त्रावान ।।

5) नेत्रन न प्रकाश हावतम च़ां'ग्य गाश,
लगहार छुस न दिम पनुन्य सुमरन ।
अद क्याह वनव अ'स्य तिमन पूर्ण प्वरशन,
यिम ध्यायिरान छि चानेन च़रणन ।।

6) प्रणव नाभि दीश मंगल दायक,
न्यथुनुनि ओ'त अचिथ जामु वलन ।
वस्त्रस म्यानिस क्वसु पायदारी,
जामु दिम दोर युथु न ज़ाह ति त्रावन ।।

7) यि काया म्योन्य क्याह सुन्दर मुलायम,
जाम प्रोव्य प्रा'व्य रूज़ दोहय न्यथन'नि ।
चोन जामु वलनस तिम इखतुयारी,
यिमन चु अनुग्रह पनुन छख करान ।
साधनाय साधतम नैत्य श्वद मे थावतम,
अदु प्रावनावतम आभूषण ।।

8) नतु. मा मोह तूरि सूत्य दज़ि हन हन,
ओरुत बन्योमुत मधुसूदन ।
आ'रच़र बोज़तम हच़र मे कास्तम,
अकटारिव चानि तर ज़नमातरन ।
वुछतु क्युथ प्रयोज़न मोंगमय मे वुन्यक्यन,
सूत्य सूत्य रोज़तम सात सातन ।।

भजन न॰ 18

चन्द्र टे'च द्रामुच़ ओमकारन ।
ब्यन्दु नादु कला छि शक्ति न'न्य ।।

1) ईम कलीम स्व यिमन त्रन कारणन ।
अर्ध मात्रा रूज़िथ तिमन ब्यो'न ।
विष्णु रूप भगवान छु कुनय ज़ोन ।।

2) क्षीरु सर शोंगुमुत छु वीदन वो'न ।
नाभि कमलु ब्रह्मा कोडथन नो'न ।
च़न्ड त म्वन्ड बन'ाविरव शीशुशयन ।।

3) चन्ड त म्वन्ड़ येलि बडेय कोरुख मनन ।
बब त मा'ज्य कुस असि को'त गछव व्वन्य
सरु मंज़ु जलच़र क'रि तिमव शयन ।।

4) लड लज्य राक्षसन छि क्षीर सर मथन ।
दोयुम कुस पोशि यिमन ब्रह्मु गातकन ।
विष्णु नेन्द्रि मंज़ छु ब्रह्मा वुछन ।।

5) हालि बद वुछिथ गव ब्रह्मा दौरान ।
रटख दोनवय करख उपदेश कनन ।
रोट तिमव सु ख'ारिहस म'ारि म'ारि टो'न्य ।।

6) ब्रह्मा त्र च़्यव अदु गव सु च़लन ।
वातान वोतुय विष्णु भवन ।
यूगु नेन्द्रि तस वुछिथ सु वारु च़लन ।।

7) प्रा'र्य-प्रा'र्य ब्रह्मा छु ग्वखती करन ।
विष्णु भगवानस छु वुज़नावन ।
ज़ाग्रथ क'रिथ छुस हाल बावान ।।

8) विष्णु तु असर छि पान'वनि लडन ।
द्यन तु राथ लड ल'ज्य बाहन वरियन ।
विष्णु थकित अद विश्राम करन ।

9) विसम्रथ गछिथ वो'न भगवानन ।
म्यति न सा'ब्रह्मा जी सामुरथ व्वन्य ।
तफ यिमन प्रदान मीलिथ वर द्वनुवुन्य वन्य ।।

10) विष्णु वुछन पानस शक्ति छो'न्य ।
व्वच़ार करिथ गव दीवी शरण ।
ध्यान दोरुन तु दुर्गा ग'यि न'न्य ।।

11) वो'न भगवानन दुर्गायि कुन ।
क्षीर सर गामित ज़ असर नन्य ।
य्वद करिथ म चाव शर्म बाहन वरीयन ।।

12) त्रे नेत्र दारवन्य च़ सिंह वाहन ।
वरदान छु चोन यिमन द्वन असरन ।
तफ यिमव छु कोरमुत ज़नमाद्यकन ।।

13) दुर्गा छि अदु भगवानस वनन ।
तपुबल तु वरदान तिहुन्द ब ज़ानन ।
स्वानन्द त्वशटु ब'निव ब गाल असरन ।।

14) न सिर्फ च़न्ड त म्वन्ड बेयि कूत्यन ।
महिश्वासुर बे'यि दय त दानवन।
व्यराठ रूप द्रायि दारिथ आयुदन ।।

15) श्री चखुर द्युत तस च़क्रुदरन ।
कमंडल गद्धा वजुर त्रिशूल शंकरन ।
कवच त यम पाश धनुष बाणन ।।

16) शारिका छि द'ारिथ अनेक आयुदन ।
केश मोखस मंज़ लदिथ कालिका बनन ।
सिंहस खसिथ छि य्वद करन ।।

17) सासु बो'ज़ ढाकिनी छि बेयि ति नच़न ।
बाह सास वरी गयी चे' य्वद करन ।
य्वद क'र्य क'र्य छि असरन गालन ।।

18) ज़लचर त थलचर छि सोख बूगान ।
पृथवी लो'चरावथ हन हन ।
वर अभय दिथ कला तीत सपदान ।।

19) यि शक्ति छि बसवन्य मंज़ ज़ीवन ।
ब्रह्म विष्णादिक छि अथि पूज़ान ।
अदृश्य किन्य छि अथ्य नादु ब्यन्द वनन ।।

20) शास्त्र तु वीदु किन्य रटुन च़ कन्य ।
ग्वरुह रूपु गौरी नेरि अद न'न्य ।
सथ ग्वरु पननुय चे़ टोठी व्वन्य ।।

21) ओम् भू भुवः स्वाह छु वीदु वचुन ।
सोरूय त्रावित्र गछ़ अर्पण ।
दुर्गा दीवी छि थापनायि ब्यो'न ।।

22) यात्रयि गछि न ज़ीव छु सोख व्यनदन ।
मन योद नु मरि कति ओम प्रखटन ।
मन ज़ीनिथ छि अदु शक्ति बनन ।।

23) सतग्वर छु पानय मधुसूदन ।
यूग नेन्द्रि मंज़ रोटुन विष्णु भगवन ।
शिव शक्ति रूप करि ज़नमन छ़यन ।।

भजन न० 19

बडि साहिबो यच़ प्रा'र्य प्रा'री ।
छोट त गोंट गोम पे'यम लाचा'री ।।

1) ल्वकचारस तुज न केंह खा'री ।
बेहोशी आ'स च़्वपा'री ।
बालु पानय ओस व्व'जारी ।।

2) यावनस मंज़ ब'र नु गम खा'री ।
रोटुस अन्दु वन्दु नफसी अ'मारी ।
कर्मु रजुनुय मंज़ चा'र्य च'री ।।

3) वृद्ध भावस करान दम शुमा'री ।
चो़रि दहि प्यठ च़्यन्तायि जा'री ।
माया ज़ाल छु बो'ड अन्दका'री ।।

4) पाँचि़ दहि ह्योर छन् य'तबा'री ।
कमि विज़ि आसि काल सवा'री ।
संसार मंजु़ पानु क्याह चे़' ला'री ।।

5) बुद बुदस गोमुत छुस फि'रारी ।
राथ द्यन करान गिरयो ज़ा'री ।
नखु डखु रोस छुस अनज़लदा'री ।।

6) समय क्रूठ प्योम स्यठा बो'ड बा'री ।
व्यचार ओस स्यठा दरका'री ।
थव न बाकी केंह कर्मय बा'री ।।

7) विष चोम अमृत अनुहा'री ।
अमृत त्योगुम विष प्रयका'री ।
लालु रोवुम कर नु व्यचा'री ।।

8) दागि दिल छुनु बलन हा'री ।
यो'द न साहिबो करख पनुन्य या'री ।
दा'दि लदसुय गोश गुज़ा'री ।।

9) सर्व शमशाद कृष्णा मुरा'री ।
मायायि ज़ल डहन प्रथ बा'री ।
फिरवा'र लगिथ ग्रटु अनवा'री ।।

10) बार साहिबो बोजुम ज़ारु पा'री ।
त्रेगुण ज़ाल छु आडम्बारी ।
मोकलावतम ज़ाल निश था'री ।।

11) सो'दुर छो'च़ नदुर छु इज़हा'री ।
गन्ड गंन्ड बोज़ ना पायदा'री ।
कोसंग पेमुच़ नादा'री ।

12) शो'त्रव ग्यूरमुत च्ववोवापारी ।
मोकलावनस मंज़ छि चा'न्य दीरी ।
करतम अनुग्रह व्वन्य मे' बोड बा'री ।।

13) यमु बयि सूत्य छुस थर था'री ।
दर तर युथ न रट अन्धकारी ।
मधुसूदन वैकुण्ठ दा'री ।।

भजन न० 20

ज़्यव तु अथु बे' ह्यस ब्यगुर अज़ साज़ ।
दिलरुबा यितु व्वन्य म. स' कर नाज़ ।।

1) अखहत आठ छय तार नवाज़
हे'रि ब्वन ब्वन ह्यो'र छि वज़ा'नी ।
शब्द क्याह नेरान बे अन्दाज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य ------।।

2) द्वन द्वन हिसन मंज़ चुवँज़ाह तरो-ताज़ ।
शेय नम्य बन्योमुत छु बोस्तानय ।
सथ बन्द गँडिथ मराज़ कमराज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य ------।।

3) शेय आ'ठि तु ज़ऽ हथ रूज़िथ बा राज़ ।
नव आठि त्रे शक्य छि यकसानय ।
अख त्रे त पाँछ़ वज़न नेरन आवाज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य ------।।

4) सति तारि छयि बन्दु अख आवाज़ ।
पाँछ़ बिहिथ त्रे' तु ज़ु छि प्रखटानय ।
त्रे'न द्वन द्वन त्रेन क्या छु इमतियाज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य -----।।

5) हतु ब'दुय स'मिथ महफिल सरफराज़ ।
अनाहत नादु साज़ वज़ा'नी ।
दह नेरान नव मेहमान-नवाज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य -----।।

6) त्रे तु जुं छि एहतिमाम पाच़न मु माज़ ।
पाँछ पाँछ म्वकलिथ पाँछ छि फयाज़ ।
नव तु पाँछ़ मारुन्य अवायुल फराज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य -----।।

7) म'जलिस त्रा'विथ बे'यि फेर बाज़ ।
नगम लोगमुत मंज़ खालिसतानय ।
च़ोर शै सथ नव दह तुलान ख'मियाज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य-----।।

8) द'हन पर फातेह च़्वन कर गुरेज़ ।
सति शे' नव तु अख छि ग्रायि मारान ।
त्रेयि त्रान द्वयि अख छु पुर परवाज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य -----।।

9) त्रन मंज़ त्रन क्या द्वयि अख छु राज़ ।
शे' न'म्य सथ स.त्य चरागानय ।
मंज़ बाग बिहिथ शाहनवाज़ ।।
दिलरुबा यितु व्वन्य -----।।

10) जु. हथ शूबनि ब'निथ पुर तकाज़ ।
हुशार रूज़िथ छु बचि नचान ।
तिम ल'गि तथ सूत्य मे' गय ख्वड रववाज़।
दिलरुबा यितु व्वन्य -----।।

11) सूहम कुज़ि चार तूँत्य तारि रज़ ।
क्वम्बक ज़ोरु जूरि वायानय ।
ओम् शब्द अख जु. त्रे' दिन ताल. ताज़ ।।
दिलरुबा यितु व्वन्य -----।।

12) राग रागनी अदु वा'च़ बर महाज़ ।
अँग भंग यूगिनी छि नचानय ।
अथुवास करनु. सूत्य क्याह रूद लिहाज़ ।।
दिलरुबा यितु व्वन्य-----।।

13) द्वन बन्यव अख तु अदु को.त गछ़ख बाज़ ।
दूरन छि तति ग्रायि मारानय ।
स्वादिष्ठान शुराह यार बन्यव साज़ बाज़ ।।
दिलरुबा यितु व्वन्य-----।।

14) सतुग्वर च' पानय अज़ लोल नवाज़ ।
मस्तानु दिलाराम नूरानय ।
बज़मस मंज़ र'टिथ बर म' दिल खवाज़ ।।
दिलरुबा यित व्वन्य------।।

15) तारि तारि ग'न्ज़ुरिथ कति रूद राज़ ।
मधुसूदन पानु ज़ानानय ।
न कोरुम कर्म धर्म न पर.मु न्यमाज़ ।।
दिलरुबा यितु व्वन्य------।।

भजन न० 21

ख्वजि हुन्द शब्द छुय गछ़ान श्वन्य श्वन्य ।
छ्वन्यि मंज़ु श्वन्य द्राव आबशारन ।।

1) नादु बिन्द ब्योल वव परव बो'न्य-बो'न्य ।
क्वलि हुन्द ज़ल फेरि पारयन खन ।
पारयन ज़ल फ्यूर लद खेतन ।।

2) ह्योर तान्य वातान फुटनुय स्यन्द ।
कर्म खेत ज़ानिथ मो कर छ्रयन ।
नेत्य नियम क्रेयायि शेर बेरन ।।

3) आबाद खेत कर थल पार व्वन्य ।
द्रेठय करुनि अन द'हन यारन ।
सूहम मंत्र सूत्य करुख पालन ।।

4) शम दम यम नियम लाग मन तन ।
सूत्य ह्यथ यिमन दहन कमाव्यन ।
वीर बो'ज़ कर्म कर युथ न. यिम च़लन ।।

5) यिम छिय चानि खोतु. बडि पहलवान ।
युथ नु. त्रावहुऽख करख खेत वा'रान ।
वुद्यूगुक हो'ल गूण्ड रात्रौ द्यन ।।

6) सत शब्द थल क'रिथ बे'यि फेर ब्वन ।
पयि लयि रठ यिमन द'हन बायन ।
थल क'रिथ मो.कल रा'छ कर डंगरन ।।

7) शाँत शीतल ज़ल बर खेतन ।
न्यन्द दिस सिरियि करिय दक्षिणायन ।
सिरियि प्रच़ण्ड च़ाल शो'मराव द'हन ।।

8) चेतनाय कामनाय म्वॅवकलिथ वोन्य ।
मन के दमनय म्वकलाव न्यनदन ।
गर्म ग्रकि सूत्य अदु खेत पपि व्वन्य ।।

9) लोलु ज़ल अन प्यठु नागुरादन ।
हे'लि. नेरि ज़ा'लिथ इन्द्रय तु मन ।
ज़ल ब'रिथ खेतन शांत कर यिमन ।।

10) फुलय ल'ज्य फसलस दि वासनायि छ्यन ।
नागुरादु श्रान गछ़ निर्वासन ।
संदृष्ट बावु किनय वुछ फुलयुन ।।

11) काहवय समिथ फ़सल छीय लोनन ।
शांथ श्रदायि अदु ज़ीनिथ मन ।
यीकु धारनायि सूत्य गंड लाव्यन ।।

12) वीरतायि श्रदायि सोम्बर लाव्यन ।
दम चे़ दमालि खल. सोम्बर व्वन्य ।
दारनायि दि व्यसतार करू ग्वन्यन ।।

13) ईकान्त वृच़ कर रा'छ यिमन ।
स्वपुनस मंज़ थाव अम्युक ज़ागरन ।
बरबुक यियि अदु ग्वन्यि बो.न्द गोन ।।

14) ध्यानु प्रतिमायि म्वो'न्ड व्यसतार व्वन्य ।
स्वपनुस ज़ागृस छोम्बुन व्वन्य ।
सुशुप्ति वनान छय कुछि बर व्वन्य ।।

15) आं'न्द बाँ'न्द यिनय तिमन नखु. वाल व्वन्य ।
दिवता त ब्रह्मा यिहिन्दय छिय ऋण ।
शशिकलु धर्म कर पनुन्यन पालन ।।

16) निष्कल रूज़िथ व्वन्य कर मोनम ।
अनाहत नादु बिन्द सूत्य दितु कन ।
अदु त्याग नीम नार वुज़मल नेरन ।।

17) धारनायि फल ह्योतनय सोरुन ।
व्यथान समादी ह्यत दोरुन ।
सूहम अदु नेरि बन्द ब्योल ब्यन ।।

18) यिहय द्ढ़ दा'रिथ आगामि समयन ।
नाद बिन्द ब्योल बे'यि बरत. ल्यजन ।
हरदु तय सोंतु थाव मनिकामन ।।

19) वाव युथ न. लगियो छुख च़ नंगु नो.न ।
काम क्रूध लोभ मोह कर यिमन त्रुन ।
छल गृहस्थ बाव दि अज़्पांयि कन ।।

20) काँह र्यल च़ अलु रुस युथ न त्राव हन ।
प्राण अपान गूड द्वन दाँदन ।
येछ़ि पछ़ि हम दम खेत वायुन ।।

21) मति अलु ज़लु सूत्य खेत कर सो'म ।
नादु बिन्द ब्योल गछ़ ववान करु मु' छैयन ।
अमि साधुनायि बनि शीशि कन्यन ।।

22) सतु ग्वरु प्रसाद बनि गछ़ शरन तिमन ।
तुर्यायि मंज़ छे'नि भवु बन्धन ।
निर्विकल्प रूज़िथ बर कुठ्यन ।।

23) अमि कर्मु क्च़ सूत्य प्रकाश बासुवुन ।
आबाद करिथ व्वन्य बँजर टुकुरन ।
पम्पोश डल फ्वलि व्यकास खेतन ।।

24) शुद्ध सतोगुण फेर नागरादन ।
तुर्या तीत छिय वनान ईक द्वन ।
अदु फेर योर बे'यि वुछ हन हन ।।

25) पम्पोश डल हाव ज्ञानु ने'त्रन ।
दज़ि अदु दीप त प्रज़ली मन ।
अन्तु काल वाती मधुसूदन ।।

भजन न० 22

गोचु के'म्य गोच़ वून्य क्याह शूबिदार ।
दि नज़र नेरान छि रीशिम तार ।।

1) बन्द ग'छ़ित त'थ्य मंज़ दोरान आर पार ।
नेरि कति छुनु व्वन्य म्वकुलन हार ।
अनि-गटि मंज़ छुनु लबान सुम तु तार ।।

2) ख्यनु ख्यनु ख्यवन खूनि हूनु हार ।
छ्रटु छ्रट क'रिथ रूज़िथ व्यकार ।
पानस ग्वच़ वोनुनुक छुस नु व्यच़ार ।।

3) पवन येलि बन्द गव तस च़ौवापा'रय् ।
प्राण हो'ख्य तु दीह गोस स्यठाह लाचार ।
व्याकुल बनिथ दीह त्रोवुन यकबार ।।

स्वर्गीय स्वामी मधुसूदन राज़दान

1969

4) अति नीरिथ गव बे'यि अण्ड तयार ।
वारि वारि फेरान छु लाखूंबार ।
च़्वयिशीथ लछ फेरान कर्म करतार ।।

5) योहय गव संसार ग्रट अनवार ।
माया ज़ल छुस डहन बार बार ।
ज़ीवस यहोय हाल ब'निथ बरकरार ।।

6) स्वभावु किन्य युस कडन यि रीशिम तार ।
निश्चीतन ब'निथ वजिन बारम्बार ।
हरशि तारि त्रोवनस मंज़ छु इन्तिशार ।

7) अकि प्यठु काहन तान्य यिम छि अतवार ।
वलनु आव गवचि़ मंज़ छु ग्वचि़ सिंगार ।
अकि प्यठु पाँचि़ शेयि दहि व्यस्तार ।।

8) ग्वच़ पाकुन'ाविथ द्रायि तारि तार ।
तारि तारि सोंबुरिथ त्रे'गन्य चो'गन्य वार ।
पाँचि़ प्यठु दहन तान्य फिरिक्यन खार ।।

9) फिरिक्यन ल'दिथ कर येन्यि तयार ।
वानस खा'रिथ त्राव वोनु-नुच़ तार ।
ठकु ठकु सूत्य गव सिल्क तयार ।।

10) सिलक तयार गव क्याह चमकदार ।
किथु केम्य कोर पानस संहार ।
संहार कारक छि चो़र अतवार ।।

11) काम क्रूद लूब मोहस प्यठ इतबार ।
तारकश आकाश मो'ठ हर बार ।
करतार पानु बनिथ त्रोवुन करतार ।।

12) चोर पन छि पांचन हुन्द आधार ।
पांचन त्रन मंज़ दिथ व्यस्तार ।
शन हन्दि स्वामियो षठ अक्षर छु सार ।।

13) इकु रस कूटस्थ कुनय ध्यान दार ।
शास्त्र प्रमाण मान काँसि मो प्रार ।
मदलाल तारनुक छुय चे यखतियार ।।

भजन न० 23

अशि वान्ये गो'ड़ दिमय दारि शम्भू ।
लोलु सारंगि चंग चे तारि शम्भू ।।

1) स्वर अस्वर व्यंजन तोल वारि शम्भू ।
गंगु जटुनय क्रेरि मंजु खारि शम्भू ।
अज़पा ज़ीर बम छयो सार शम्भू ।।

2) जटि मंज़ गंग छि अमर्यथ दार शम्भू ।
कला शेखरस शेखर दारि शम्भू ।
सगनावन भूमि हुन्ज़ि वारि शम्भू ।।

3) शांन्त शीतलस ज़हर आहार शम्भू ।
सर्व शादाब सो'न ज़रकार शम्भू ।
रो'पु तनि मलिथु कंठु गिलकारि शम्भू ।।

4) शैव रन्द्रस जटि फुलवारि शम्भू ।
ब्रू मध्यस त्रे नेथुर दारि शम्भू ।
ब्रंकूटी तस ज़्वाला जुहारि शम्भू ।।

5) ड़े'कि चन्द्रकल तमि अनुहार शम्भू ।
डोरि डोरि फिरान तथ ज़लदार शम्भू ।
वामु बागस सु गौरी दारि शम्भू ।।

6) शैव शक्ति सु लिंगाकार शम्भू ।
लिंग त प्रनाल प्रतिमा व्यचार शम्भू ।
पारथीश्वरस छि पूज़ा सार शम्भू ।।

7) नीलकण्ठस वृषभ सवारि शम्भू ।
सिंहआसन सिंह तस प्रारि शम्भू ।
गौरी गणेश ल्वलि मंज़ दारि शम्भू ।।

8) पूर्ण आत्मा ह्यथ परिवार शम्भू ।
स्व गुन रूप व'लिथ शहमार शम्भू ।
निराहारस पवन आहार शम्भू ।।

9) शुमशान बल क्रीडायि दार शम्भू ।
कलु-मालन दिथं व्यसतार शम्भू ।
शिन्याकारस यूत व्यवहार शम्भू ।।

10) रूप भयानक कोरमुत विकार शम्भू ।
शामु स्वन्दर युस अक्षर मकार शम्भू ।
भा'रुवन सूत्य डालु सुय मारि शम्भू ।।

11) पादकमलव तालु क्याह मारि शम्भू ।
जटि ताडन भव भयु हारि शम्भू ।
भक्ति भाव किन्य भक्तन सु तारि शम्भू ।।

12) रस पूर्णमय छु आनन्दसार शम्भू ।
गोकलस मंज़ चे कृष्ण जू प्रारि शम्भू ।
चन्द्रु सिर्यस गव पानय मिलचार शम्भू ।।

13) शैव कृष्णस ख्वनि मंज़ खारि शम्भू ।
नालु रटिथय द्वन कुनय पुकारि शम्भू ।
पूनिम मावसि छि ज़ानन हार शम्भू।

14) बागीरथ गंगुबलु प्रारि शम्भू ।
आकाश गंग तफ तस यारि शम्भू ।
चन्द्रु शेखर कलु तस दारि शम्भू ।।

15) शैव शेखरस ज़ल प्रसू चारि शम्भू ।
ब्रह्म रन्दरस प्रयम कुलवारि शम्भू ।
विकास करि यथ दिहि पोशिवारि शम्भू ।।

16) फ्वलि पोशिबाग अनुग्रह अम्बार शम्भू ।
ग्वरु रूप मधुसूदन तारि शम्भू ।
ज़नमु ज़नम चटि फिरुवारि शम्भू ।।

भजन न० 24

त्रगुण ज़लरिज़ाल व्वन्य मोकलुन महाल ।
व्वन्य यित सालु श्री कृष्णो ।।

1) श्रीधर माधव हयो नन्द लाल ।
वासुदेव गोविन्द नारानो ।
त्रन मंज़ त्रन क्याह छुस बु बेहाल ।।

2) राम श्याम बलराम गज़िन्द्र पाल ।
पानु छुक व्यापक साहिबानो ।
दशरथ कैकी जानकी बेहाल ।।

3) रूप दा'र्य दा'र्य क'रुथ पृथवी बहाल ।
दीवु ऋष्यन गन्दर्व छि म्वकुलानो ।
दक्ष्यराज़स वुछतु क्याह बन्यव हाल ।।

4) दुनिया फ'नाई क्याह छु म्योन हाल ।
त्रगुन यि ज़ाल छुख बनावानो ।
अथ मंज़ फसिथ म्योन क्याह मजाल ।।

5) त्रन हालुच़न मंज़ त्रज़गतपाल ।
अज्ञानु सूत्य छुख दूरानी ।
कंस दुर्योधन वुछितन शशिपाल ।।

6) त्रगुनमय माया क्याह अजब चाल ।
काम क्रूध लोभ मोह छु सामानो ।
म्यच़ पोन्य नार बाद बन्यव स्वन्दरमाल ।।

7) माछि मंजु तुलुरि छु मोकलुन महाल ।
पन्नि गन्द ग्रान पान वलानो ।
ज़ड ज्ञान बु द्धी कुस लबि गुलाल ।।

8) म्येचि़ मंज़ म्यच़ मिलनावुन कालिकाल ।
सोर सामान् कर यकसानो ।
सूरस छांड दिथ नेरि गुलाल् ।।

9) त्रिलूकीनाथ बरय द्वद हर् प्यालु ।
यिथु पाठय गूपी छि बरानो ।
दामा चतु छुम सुदामु कंकाल ।।

10) न ह्यकुन दरपेश प्रारान छु काल् ।
अभिप्राय म्योन कोनु बोज़ानो ।
भर्गलतायि बिहित त्राविथ मलाल् ।।

11) धर्म दान ज़ोनुम न ब्वद आ'स बाल ।
शैख्यायि बूज़ित न चे़नानो ।
दंडवत प्रणाम बोज़ करतम निहाल ।।

12) राधा ब. प्रारान दीनुदयाल ।
शैव शंकर चे' नालु रटानो ।
ओरुत ब गोमुत वसान अशि चाल ।।

13) यथ समयस प्यठ रुद न् कांह हाल ।
आशि तोश दिम पनुन वरदानो ।
आश छम अन्तु कालु कड मे' कालु ज़ाल ।।

14) ज़्यव छमनु वनु क्याह चोनुय जमाल ।
यच़काल वोतुम प्रारानो ।
पीताम्बर मधुसूदन् लाल ।।

भजन न० 25

अल्फ़ुय अवलाह सिरियि सुन्द्य पा'ठ्य ।
कृष्णा छुख ज़ोतुवुनुय ।।

1) त्रन बागु दिथ छुख चु बागुक नूरानय नोनुय ।
ये'छि पनुने कोरुथ संसार,
पानस निश चे़य ब्योनुय।
शमसुल उलमा छुख चु पानय,
विष्णु छुख शमशाद नोनय
अल्फ़ुय अवलाह ------।।

2) क्या वनय न'न्य कुदरथा वुछ
ज़्यन गरि ज़गत सोवनय ।
कैदखानस दारि बर व'थ्य
कुण्ड जन्द्र मुचुराविनय ।
आ'स मुचुरिथ टैक्साल वुछ
विष्णु रूप सोरुय होवनय ।
अल्फुय अवलाह ------।।

3) जमुना अन्द्य उन्द्य छि
फेरान सहस्र डल व्वपदोवनय ।
निराकार आ'सिथ सु पानय
शीष कमल त्रोवनय ।
ज़नम दोरुन रहस्य होवुन
माजि निश सीर बोवनय ।।
अल्फुय अवलाह ------।।

4) मथुरा त्राविथ सु गोकुल द्वारिका
तम्य बसा'वनय ।
त्रन जायन त्रन कारयन-
कृष्ण अवतार होवनय ।
खबरदार युस अथ सिरस-
कृष्ण जुव तम्य गोर नय ।
अल्फुय अवलाह ------।।

5) गोर सुदामन बे'यि द्रुपदी-
भक्ति भाव त'म्य खारिनय ।
दाल धन तस बो'ड़ खज़ाना
पान. छुय मंगवोनय ।
यहोय विष्णु यहोय शैव जी-
यहोय ब्रह्म रूप छुय नोनुय ।
अल्फ़ुय अवलाह ------।।

6) राज़ दशरथ ओस वो'.मेदवार
ज़नम ज़नम तफ यूरनय ।
च़ोर बरादर भरत शुत्रघन्न
राम लक्षमण प्रोवनय ।
अद् ज़खेरा असरन हुन्द योग
पत तम्य गा'लिनय ।
अल्फ़ुय अवलाह ------।।

7) दा'रन माया सूत्य पकवन्य
ओस रावुण मोरुनय ।
फ्यूर जँगलन राम लक्षमण क्याज़ि
ऋषि आ'स गारनय ।
च़ोन टवगन च़ोरि रूप केशव
सूत्य सूत्य तस शैवकुनय ।
अल्फ़ुय अवलाह ------।।

8) सागरस मंज़ शीश शयन गव
सु कैलास नंग नो.नय ।
वासुदीव हर गँगाधर च़तुर
म्वख व्वप दोवनय ।
ब्योन कोरनय संसार वृक्ष मूल
ह्योर तय शाख बो.नय ।
अल्फ़ुय अवलाह ------।।

9) कर्म रज़नय चा'रि चा'री च़र
त. अच़र था'विनय ।
युन त. गछुन ज़्योन त मरुन
यूग कला हा'वनय ।
च़्वयशीथ लछ वोलँगिथ मनशि
दीह छु द्रोग्र मेलनुय ।
अल्फ़ुय अवलाह ------।।

10) म. सा' रावर क्या छु बावर यि
छु ये'ती त्रावनुय ।
उमद् अमर छि त्याग तबर
दृढ़ भाव वृक्ष थलनुय ।
नित्य नियम सूत्य कर गुज़र
संसार वृक्ष प्राटुनय ।
अल्फ़ुय अवलाह ------।।

11) ग्वर शब्दै पयवन्द कर नव्य नेरन बामनय ।
लय करतो ओम्कारस यी
ह्यथ छु प्राण त्रावुनय ।
शम दम बेयि प्राण अपान
चाक वारि गछ़ि लमुनय ।
अल्फुय अवलाह ------।।

12) युथ न रटनय अंतु समयस
तम त दम बेयि खमनय ।
अथ वनान छिय लूक अपिवाद
मृत्य लूकस भ्रमुनय ।
ग्रट फेरान छ़ल छ़लय
ज़्यवि ज़्यवि छु मरुनय ।
अल्फुय अवलाह ------।।

13) यहोय आदेश रटू पानो चटू बन्धन प्रोनुय ।
गछ़ च़ शरण सतग्वरन अद
लाले यमन छाँडुनय ।
पथ परवतो मद लालो
नक्श कदम छु रामुनय ।
अल्फुय अवलाह ------।।

भजन न॰ 26

रामु कृष्णु शंकर हरे मुरारी ।
हरे नाथु नारायण वासुदेव ।।

1) अमुरयथ मा'निथ विष छुख चवान ।
पुश प्यवान छुख होज़न तु रादन ।
मशरा'विथ छुख आनन्दु भवन ।।
हरे नाथ ----------।।

2) माया छि छ़ाया गिरवीद दामन ।
सूत्य छय दक्षण उत्तर पश्चम पकन ।
बासान ते'लि ये'लि तापस पकन ।।
हरे नाथ ----------।।

3) त्रुक त्यलि लगन ये'लि कोन्ड अच़न ।
वर्जित यलि रोज़ि त्रनय पादन ।
त्रन पाद सपदान बचाव कन्ड्यन ।।
हरे नाथ ----------।।

4) माया मस छुय वलिथय पकन ।
पोशन सूत्य युथ कन्ड्य छिय रोज़न ।
कोंन्ड त्यलि बासन यलि पोश च़टन ।।
हरे नाथ ----------।।

5) ट्योठ मोदरा'विथ मस छुख चवन ।
युस पावन छुय प्यठ वतन ।
कफ वात पित छय दिहस रटन ।।
हरे नाथ ----------।।

6) कारण तथ छय सँग आलिंगन ।
क्वसँग मुल मायि छुय इन्द्रयन ।
म्वकलान त्यलि यलि सत सँग रटन ।।
हरे नाथ ----------।।

7) नज़रि ब्रोंठु कनि कोन. छुख़ पशन ।
रा'च़ मंज़ रोज़ान छय अन्धिया'री ।
अनि गट च़लान यलि सिरियि खसान ।।
हरे नाथ ----------।।

8) गँगा त्रा'विथ छुख ह्यनरस फटन ।
काम क्रूध लोभ मोह बरिथ मटन ।
स्त्री संतान धन छुय रटन ।।
हरे नाथ ----------।।

9) बरथ'री राज़स ये'लि सँकल्प मिटन ।
राजस ताजस यक कलम छु त्रावन ।
गँगयि बिहान प्यठ नील वटन ।।
हरे नाथ ----------।।

10) पवन अन्दर कोनु छुख रटन ।
फेरनि गछ़ान कोहन पर्वतन ।
पक्य पक्य फीर फीर को'ठ्य छि फुटन ।।
हरे नाथ ----------।।

11) ललद्यदि वनिमत्य कोत्याह वचन ।
वन्य वन्य गा'मच़ केंछा रटन ।
न छु केंह त्रावुन न छु केंह रटुन ।।
हरे नाथ ----------।।

11) मिश अचि़ माज़स वुछ मा रटन ।
दग रोज़ि़ तथ यो'तान्य न मिश हटन ।
मिश नेरि कति योत तान्य न माज़ चटन ।।
हरे नाथ ----------।।

12) अन्द्रयुम केंह छुन. न्यबर कडुन ।
न्यबर्युम गछ़ि न केंह अन्दर रटुन ।
अन्द्रयुम अन्दर न्यबर्युम छुन गगन ।।
हरे नाथ ----------।।

13) अनि गटि मंज़ क्या अ'छन गछ़न ।
कन्द्य छा तति कुनि तिमय अचन ।
अ'छय वाहरा'विथ छुख अपुज़ुय त्रचन ।।
हरे नाथ ----------।।

14) व'न्य व'न्य कथन छुख न केंह रटन ।
हति मंज़ बोज़ अख यहोय सथ वच़न ।
हिंसा त्राव म. वन निन्दत. वच़न ।।
हरे नाथ ----------।।

15) सथ त्र'ाविथ छुख असथ रटन ।
असथ त्राव पोज़ मान वीद वच़न ।
बनि उपकारी पानस मधुसूदन ।।
हरे नाथ ----------।।

भजन न० 27

वचि यन्दरस पन तुलान लोलो ।
यहोय हाल दीहस बनान लोलो ।
डींज म्वकलिथ शुन्य गछान लोलो ।
शुन्य मँज़ बेयि नो'व बनान लोलो ।।

1) कटु प्यठु डेंजि तान्य सूत्य क्या क'रिथ ।
शन र्ये'तन जोरु पट तयार करिथ ।
वल त. च़ादर करतु. आराम लोलो ।।
वचि यन्द्रस -------।।

2) चा़दर व'लिथ यलि छुख नेरान ।
कमि लोलु मायि छुख पानस वुछान ।
ज़ोर पट मे' क्या शूबान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

3) चा़दर प्रा'न्य गयि चु गोख नाख्वश ।
छ़निथ त्राविथ दिचुथ यि मंण्डनस ।
पानु को'रुथ नो'व इन्तिज़ाम लोलो ।।
वचि यन्द्रस ---------।।

4) न्यतन. मंण्डन. क्या बन्यव जोरु पटिस ।
यहा'य तुल त्राव बोज़ यथ दिहस ।
यि दून दो'न. पलन छुय करान लोलो ।।
वचि यन्द्रस ---------।।

5) दूनि. यलि दून्य दिच़ को'रनस धक दूंन ।
त्वमबि तु माल करिथ कोरुख तासूंन ।
यन्द्रु मालि कोरनस कतुन लोलो ।।
वचि यन्द्रस ---------।।

6) को.'तुन शिनि शब्द तार कड़नस ।
का'नि क'रिथ द्युतुख खांनूदस ।
ह्योतनय तमि यि दो'ग. नावुन लोलो ।।
वचि यन्द्रस ---------:।

7) य'न्य करिथ वोनुन द्युतुख वोवरिस ।
वोवर्य खोर तछ़य क'रथि वून्य वानस ।
कंगन्य ला'गिथ ह्योतुन वोनुन लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

8) वोवर्य वून्य पाँछ़ पाँछ़ गज़ जु पट ।
दह गज़ सुविथ बनेयि कुनी जोर पट ।
कंद्य् वोजुज्य करिथ छि शोलान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

9) नि प्रमाण च़ादर मान पनुनुय पान ।
पांछ पांछ इन्द्रय पांछ गन्द ग्रान ।
मन ब्वद्ध यिमन छि रटान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

10) बे'यि ति बोज़ दिह अफसानु वनय ।
अहंकार आत्मा पांछ प्राण वनय ।
यिम छि यथ दिहस तान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

11) यिथ पा'ठ्य दह गज़ च़ादरि हुन्द प्रमाण ।
तिथय पा'ठ्य चो'वुह त्वथ आत्मा सान ।
जोरि वोल आत्मा बनान लोलो ।।
वचि य़न्द्रस --------।।

12) प्रानि च़ादरि यथ अवड़ाल क'रिथ ।
मँण्डनाविथ साबन्य सूत्य गालिथ ।
पो'.ट बन्यव नोव अख थान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

13) यिथ पा'ठ्य यथ दिहस चु पा'लिथ ।
वासना प्रकृत हनि हनि मलिथ ।
चेतन आत्मा छु नो.व छांडुन लोलो ।।
वचि यन्द्रय --------।।

14) युथ बन्यव प्रानि च़ादरि नो'व चीज़ा ।
प्रोन दिह मरिथ बन्यव नोव ज़ीवा ।
प.टि रूप वासना धा'रुन लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

15) यनि वोनुन येरस बन्येयि जु भीद ब्यन ।
कारण स्थूल बन्ययि व्यलक्ष्यण ।
सूक्ष्म रूप आत्मा बसान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

16) डींज शिन्य ज़ान सूक्ष्म द्राव न्यबर ।
स्थूल प्यव कारण गव दरबदर ।
सूक्ष्म छुय पान भगवान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

17) स्थूल मान म्यच़ बन. रोद्र हाड मास ।
ज़िनि बनि ज़ा'लिथ गछ़ान सूर सास ।
म्वरदु प्यठ दज़ान शुमशान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

18) कारण ग'यि च़ादर यो'स मंडना वथ ।
वनन वासना यथ पो'ट बनोवुथ ।
वासनाय काल मंदान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

19) यि हाल यो'त तान्य बनोवुथ येरस ।
यि हालि बद बनावि काल वासना-दिहस ।
रज़ छ़निथ छिस पकनावन लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

20) सूक्ष्मस खो'त न मल छु करान स्काष ।
स्थूलस सूर गव को'रुस डुब डास ।
वासनायि बोज़ क्या करान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

21) वासनायि दिहस चु पानु. ज़िमवार ।
स्थूल मंज़ बसिथ छुय करान कारबार ।
रुत त क्रुत पान. वोन्य च़ाल लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

22) आत्म रूप येरस यथ सथ दब दिवान ।
अमि नियमु दिह सथ नरुक भूगान ।
प्रावान गर्भादान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

23) येर ज़ान दिह व'लिथ चो'वहुन त्वतन ।
यिथ पा'ठ्य ज़ोर प.ट. वलिथ गोख प्रसन्न ।
नो.व दिह ल'बिथ सूक्ष्म असान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

24) कारण तु सूक्ष्म यिम बेयि मीलिय ।
गर्भ मसाल. बन्यव लूह मास हडी ।
स्थूल बन्यव नो'व कर्म करान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

25) ज़ान च़ कुम्बीपाक छुय गर्भ दारुन ।
सूक्ष्म वुछान वासनाय क्या छु ब्यन ।
शिनि शब्द कल. नल. बनान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

26) जुव चास न्यबर द्राव नव र्यथ गछ़ान ।
वासनाय शिनि नो'व. तसवीर बनान ।
म्वछि व'टिथ शिन्य बनान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

27) म्वठ बन्येयि प्रारब्द छु वासना रंगान ।
दण्डनोम दिह द्राव ज़ोरु वदान ।
शिन आत्मा छु बोलान लोलो ।।
वचि यन्द्रस -------।।

28) वासना छि प्रकृथ बनान कर्म क्रथ ।
संच्यथ प्रारब्द मीलिथ क्यथ ।
ट'ट्य क्युम टटि मंज़ फ्वलान लोलो ।।
वचि यन्द्रस -------।।

29) ट'ट्य क्युम ज़ानि क्या क्या छुम बनान ।
टटि मंज़ फ'टिथ तस अनि गट वसान ।
टटि सूत्य यड़ छु बरान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

30) ज़ीवस ति गंबु मंज़ कलु सूत्य पकुन ।
पाकु पा'ल. मल मूत्र लिथ नावुन ।
यी ख्यथ-च्यथ छु पलान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

31) येरु डींज म्वकलिथ क्या छु अथ बनन ।
पतिम म्वकलाविथ बेयिह्यन मेलन ।
नो'व तु प्रोन मीलिथ यन्य बनान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

32) यन्य येर त्राव छुख च़ादर वलान ।
ज़ीव छुय त्रे' च़ोर अवस्थायि वुलगान ।
च़्ववुहि प्रका'रय मल तस वलान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

33) यिथ पा'ठ्य चादर छुख त्रावान वलान ।
तिथय पाठ्य आत्मा दिहस रटान त्रावान ।
ज़नुम-ज़नमु छुस फिरवान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

34) च़्ववुहन त्वतन इन्द्रय दासन ।
ज्ञान ब्वद्ध बनावमचु प्रदान यिमन ।
ज्ञान बुद्धी दीप दज़ान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

35) ज्ञान बुद्धी दज़ि वासनायि मल ।
आत्म रूप प्रज़लिथ बनख निष्कल ।
गूपी रूप रमन रमान लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

36) अमि अभिप्राय बोज़ ब्याख व्वन्य खेल ।
सूत्य सूत्य च़्ववुहन त्वतन तु वासनायि मेल ।
ज़ानन्य वीद शास्त्र तु पुराण लोलो ।।
वचि यन्द्रस --------।।

37) वीद मंज़ नेरन कर्म कान्ड ज्ञान ।
सब्र किन्य अथ्य सूत्य लाग मन त प्राण ।
धार ग्वर ज़ान कर न'ाविय लोलो ।।
वचि,यन्द्रस ---------।।

38) ग्वरु ज्ञान विद्या येलि प्रसाद करान ।
नो.न गव स्थूल सूक्ष्म कारण मेलन ।
नन्य ग'यि व्वन्य वुसतु खान लोलो ।।
वचि यन्द्रस ---------।।

39) यहोय गव कर्म काण्ड ज़ानन्य वुसतुखान ।
शो'क़ पनुसुन युन गछुन करान ।
यि ज़ान-नुय वनान ब्रह्मु ज्ञान लोलो ।।
वचि यन्द्रस ---------।।

40) न. ज़ा'निथ ब्रह्म ज्ञान छि वतलभुजि करान ।
युन गछुन ज़न्मु ज़न्मु ग्रटु फेरान ।
अज्ञान चक्र छुय नचान लोलो ।।
वचि यन्द्रस ---------।।

41) ग्रटु किज छय फुटान बरोय ब्रह्म ज्ञान ।
यथ प्यठ ग्रटु चक्र छय नचान ।
ग्रटु ब्यूठ छुख चु रिन्दान लोलो ।।
वचि यन्द्रस ---------।।

42) निर्वान छि मुक्ति पानय सु दय ।
रटि युस म्वकलि अज़ संसार लय ।
का'ल्य मधुसूदन छु मेलन लोलो ।।
वचि यन्द्रस -------।।

भजन न० 28

शाम स्वन्दरस जाम छती – लो लती लो ।
पूज़ि लागस पोशि फोती – लो लती लो ।।

1) व'न्य ब दिमसय वति वते - ला'र्य वते गव ।
गम त गोसय भावस तती - लो लती लो ।।

2) ऋशि माल्युन वोत तती - गोमय लूसिथ दोह ।
छ़ायि करसय नालुमती - लो लती लो ।।

3) खसुन कोताह पकु लोतय - झूल वछु हो ।
राम लक्ष्मण बाल मो'तय - लो लती लो ।।

4) छ़ाल म'ारिथ नेरू तती - गोवरधन हो ।
मंदर बुछित ब्यहतु तती - लो लती लो ।।

5) शाम स्वन्दर नेन्द्रि हो'तुय - दिसू आलव हो ।
नाद लायिथ अछ तु तोतय - लो लती लो ।।

6) शाम वुछित वसू पो'तय - साध माल्युन हो ।
पोशि डल वुछ फ्वलमुतय - लो लती लो ।।

7) दूप दीपय ज़ालु ब'ती - लोलु ज्योति हो ।
कनि फल्यन पूज़ ततती - लो लती लो ।।

8) प्राण अपानय श्रान दिथुय - शंख घन्टा हो ।
च़रणु अमर्यथ च़्यतु ततती - लो लती लो ।।

9) करतु प्रणाम ब्रोन्ठ पती - सालिग्रामस हो ।
ह्यथ वयकुण्ठ ब्यहतुॅ ततती - लो लती लो ।।

10) गदु गदु वा'णी लूकन दिथुय-कृष्ण सुमरन हो ।
वयकुण्ठ मदुलालस सूत्यी - लो लती लो ।।

भजन न० 29

अख गुल थोवमुत मंज़ गुलदानस ।
कृष्ण भगवानस छि पोश पूज़ा ।।

1) सोरुय अयान छुय क्या करख बयानस ।
साहब छु बिहिथ पानय वानस ।
रंगा रंग सोदा कनान यकसानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

2) क्या ज़बर गुलदस्त रा'छ्य नो वानस ।
ला अलिमस छमनु. ज़ान पानस ।
कुस गुल छु करवुन अखतर जहानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

3) ज़ा'न्य हुन्द अन्यर छुम प्यो'मुत पानस ।
अख गुल वुछुम नु मंज़ गुलदानस ।
सासु मंज़ छ'ारिथ यहोय मंज़ पानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

4) लाल गुल छि वनान गुलि मसतानस ।
मसतान गुल ताबान पानस ।
खशमु ह'च़ चश्म बनन मंज़ मोयखवानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

5) लाल पील गुल बसान मंज़ सुनसानस ।
नीलोफर नीलकंठ प्यठ शुमशान ।
सफेद रंग गुल छुय मंज़ मुन्यन पानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

6) जाफ़र तु केसर पूज़ि ईशानस ।
ज़ोतवुन मोख्तु मंज़ कोंग दहानस ।
अश्कु पेचान येम्य वो'लमुत पानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

7) सिरियि, तारक, च़न्द्र प्यठ आसमानस ।
गुलि दोवूद रठ मंज़ ध्यानस ।
यहोय छुय साहब बिहिथ वानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

8) तुलसी छि वलभा ना'ल्य नारानस ।
राधा स्वयमवर भगवानस ।
गूपी फुलवारि गूकल ग्रामस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

9) तारकन मंज़ छुय चन्द्र इमकानस ।
शुराह कलायि पूर्ण डेशान तस ।
गुलिसतान त्राव गुल मंज़ गुलदानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

10) त्रेयि रंग फुलवारि व'न्य दिथ जहानस ।
सासु मंज़ खास अख मीलिथ तस ।
मदुलाल त्रा'विथ सा'री गछि़ पानस ।।
कृष्ण भगवानस ------।।

भजन न० 30

प्यठ का'लास मारवुन डालु शम्भू ।
अज़पा ज़ीर बम चिय तालु शम्भू ।
नेत्र कमलन करय बो मालु शम्भू ।।

1) नंग ग्वसोन्य क्या स्वनदर माल शम्भू ।
ना'ल्य दा'रिथ सर्पय मालु शम्भू ।
तनि भस्मा व'लिथ मृगु छालु शम्भू ।।

2) गणपत छु वायान वसूल शम्भू ।
नारुद रटिथ तमबूर मंज़ तालि शम्भू ।
सरस्वती वायान वीना छि नालु शम्भू ।।

3) दिश तिम तम वज़ान वसूल शम्भू ।
तिरडम तरडम डोल.चि खालु शम्भू ।
नादिर दा'नी ड़ाबर दुताल शम्भू ।।

4) तफ तपावन प्रार. कूत कालु शम्भू ।
त्रिगुण आनन्द आ'सिथ सर्व कालु शम्भू ।
सर्व व्यापक म.करु अवडालु शम्भू ।।

5) गद्य पद्य ह्येथ नेरतु. नालु. शम्भू ।
आ'रच़र बोज़तु यितु. अकि छ़ालि शम्भू ।
मोह ज़ाल कड़ मे' त्रुजगत पालु शम्भू ।।

6) आ'दीन पाल दा'रिथ त्रिशूल शम्भू ।
त्रन पीठन हुन्द निहाल शम्भू ।
विष्ण ब्रह्म महेश सूत्य मदुलाल शम्भू ।।

भजन न० 31

डम डम डडम डोल वायान लो लो ।
बेराग्य अगूचर दमालु लो लो ।।

1) अखहथ काह शैव विशालु लो लो ।
सार्यय समेयि तिम गतालु लो लो ।
दुरमठ पद्यव वालन कोह त बाल लो लो ।।
डम डम ----------।।

2) ग्वडु र्वन्य गंडिथ भूगोल लो लो ।
र्वन्य छन गरू घंटालु लो लो ।
छ्वन्य बोज़ वज़ान घडियालु लो लो ।।
डम डम ----------।।

3) शब्द ब्रह्म नेरन तमूल लो लो ।
नाच छुनु नचुन बेडोल लो लो ।
शंख वज़ान भयंकर बेचालि लो लो ।।
डम डम ----------।।

4) शैव छुनु बाँड प्यठ बालु लो लो ।
भैरव सारी नंग बालु लो लो ।
ना'ल्य दारिथ सर्पन हंजु मालु लो लो ।।
डम डम ----------।।

5) बीन छकन स्वरनय बेचालि लो लो ।
शाहमार गा'मुत्य मुतवाल लो लो ।
ज़हर हारान नच़न कुण्डालु लो लो ।।
डम डम ----------।।

6) अल्प बुद्धि वन क्या चोन हालु लो लो ।
स्यदि ब्वदि करतम इकबालु लो लो ।
यूगा रूडम मधुसूदन पालु लो लो ।।

भजन न० 32

हा मत्यो कत्यू छय च़े आसन ज़ाये ।
बेराग्य अगूच़र च़ु बे परवाये ।।

1) रंग रूप डो'लमुत छु खसतु काये ।
अंग भंग को'रमुत सूर म'लिथ आये ।
केलास ब्वन व'सिथ हिमाल कुन द्राये ।।
हा मत्यो कत्यू ------।।

2) भूल भालु मतवालु दा'रिथ दरदु काये ।
अथ दण्ड कमण्डल डाबुर ह्यथ द्राये ।
भिक्षाय फेरान शरीर संम्पताये ।।
हा मत्यो कत्यू ------।।

3) विक्राल रूप दा'रिथ हिमाल वाचाये ।
जो'लि मंज़ गणेश कुमार अलरान द्राये ।
तमि रूपु हिमालय सारी तम्बल्याये ।।
हा म़त्यो कत्यू --------।।

4) शिव पार्वती का'लाश कुन द्राये ।
त्रिकूटी दिवता सूत्य सूत्य पचाये ।
शीन, रूद, वाव, वुश अख बन्याये ।।
हा मत्यो कत्यू --------।।

5) नव निदान आसिथ बंगि हुंज़ चे' माये ।
गवरी ईश'वरी वरनि कति आये ।
नंग नो'न छो'न ह्यो'न चवान गंगाये ।।
हा मत्यो कत्यू --------।।

6) रज़तम पाप येलि ज़्याद व्वपद्याये ।
विष चनु चाने दिवता बचाये ।
नूर. बुथि सूर म'लिथ रूप कायाये ।।
हा मत्यो कत्यू --------।।

7) शैव लीला क'रिथ अनामय बन्याये ।
श्वद ब्वद प्राविथ धरमस जाये ।
सूत्य गुरु आदीनपाल यीकु बन्याये ।।
हा मत्यो कत्यू --------।।

भजन न० 33

ओम् नमो नारायणाय कृष्णाये ।
युस मन स्वरि सुय बनि गुलज़ार ।।

1) स्वर नस साधन बागवान यिथ प्यठ ।
बाग़स हनि हनि छुय खबरदार ।
तिथय पा'ठ्य पानस व्वन्य अन मंज़ मनि ।
कम छिय गुल तय कम छिय खार ।
गुल तु खार वारु-वारु ब्यो'न-ब्यो'न चा'रिथ
खार कड वारु वुछ बागुक बहार ।।
ओम् नमो ----------।।

2) यिथ पा'ठ्य बाग़वान कुलि कुलि फेरान ।
कछ कडिथ कुलिस थावान बरकरार ।
निष्काम सु बाग़वान यच्छा दा'रिथ ।
बागु वा'ल्य सुन्द करान कार बेगार ।
तिथय पा'ठ्य ज्ञान बो.ज़ सूत्य मन शो'ज़रिथ।
सा'री यन्द्रय थवुख न्यरव्यकार ।
ओम् नमो ----------।।

3) बागु वोल बाग़वान यिथ पा'ठ्य दोषवय ।
निर व शँका छिय करान का'म कार ।
तिछुय अन यछा दा'रिथ ।
इन्द्रय विषयव निश थावुख निराहार ।
ग्वडनिच साधना मन शो'ज़ रावनच्य ।
ठेकुदार बाग़ वुछिथ कडान चन्दु द्यार ।
ओम् नमो ----------।।

4) बागुबोल व्यहरु गव ठेकदार फस्यव ।
बाग़वान रा'छ प्यठ रूज़िथ तयार ।
तिथय पा'ठ्य विषय भूग इन्द्रय मा'रिथ ।
ज्ञान ब्वद्ध ठेकदार मनस छय संवार ।
ठेकदार शोंग मस' माल ग्वडु सोम्बराव ।
चन्दु क्यन द्यारन मसा गिन्द ज़ार ।
ओम् नमो ----------।।

5) अद रा'छदर संज़ मो'जूर्य म्वकला'विथ ।
माल तुलना'विथ अमबरस सार ।
अमबरस था'विथ वार.सम्बालिथ ।
क्रख दिथ वाती अथ खरीदार ।
खरीदारस माल तोल नाविथ ।
दित मितिस रक्मस नफा खार ।
ओम् नमो ----------।।

6) नफा छु खसान प्रथ ठेकदारस ।
संतोष वृत यस बेयि सत व्यचार ।
सतुच कुंज़ ह्यथ युस छु दिहधारी ।
प्राव वुन छु नफा बारम्बार ।
अंबरख-अंबरव नफा प्रा'विथ ।
ग्यवान दम दम मंगला चार ।
ओम् नमो ----------।।

7) नफा समान तस डेरव-डेरव ।
युस करि ब्रह्म सूत्रस कल कहार ।
करुन क्या गंज़रिथ यीत्यन द्यारन ।
मटि क्या छु वत्युक ज़िमवार ।
खरीदार ति पानय अम्बारदार ति पानय ।
छुन. प्यठ थोवमुत मे करमुन बार ।
ओम् नमो ----------।।

8) करमु बोर वालनच विदी छि अकॉ'य ।
ईकु रस रूज़िथ धारना दार ।
धारणा दा'रिथ वथ व्यचा़'रिथ ।
अवस्थायि च़्वशवय युस करि पार ।
मुक्ति पद मे वोनमुत तुर्यायि पतय ।
श्री कृष्ण कर कृपा केंछा मे' यार ।
ओम् नमो ----------।।

9) विषयन मंज़ बसिथ ज़लनोम गो'त गो'त ।
क्या बन्योम किथु पा'ठ्य बन्यम च़ोर यार ।
लड़ाय जगड़ु सोरुय छ़यनिहे ।
यो.द करख कर्मन म्यान्यन दशहार ।
गोतम को.ल मँज़ नाव म्योन छु च़े व्यो'द ।
यन्द्राजु करतु मेति फरदि आधिकार ।।
ओम् नमो ----------।।

'ख' खण्ड

भजन न० 1

कालु प्वरुशु क्याज़ि वोलथम नाल लोलो ।
छ्वन्य छ्वन्य दार बाबा जी आव लोलो ।
कालु पाश च़ठ त्राव मलालु लोलो ।।

1) प़न्गस प्यठ बिहिथ दारिथ शाहमार ।
रंगुकुठि मंज़ द्राव ब्यूठ नँग बाल ।
हँगु मँगु रो'टुन शुम्शान लोलो ।।
कालु प्वरुशु क्याज़ि ---- ।।

2) शिव लिंग वुछ्तु क्युथ श्याम सुन्दर ।
युस स्वरि तस छुनु काल पोरान ।
मारकाँ'डियन ति रो'ट शिवाल लोलो ।।
कालु प्वरुशु क्याज़ि -----।।

3) वरनी गन्डिथ सु शिव पूज़ा करान ।
च्यथ शिवाल लिंग प्रतिमा दारान ।
काल वोत् तस अमी सातु लोलो ।।
कालु प्वरुशु क्याज़ि -----।।

4) ईक धारनायि तस लीन गोमुत मन ।
ब्यल पोश पम्पोश पूज़ि लागन ।
कालु छ़ाय वुछित गव दुचारु लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याज़ि ----।।

5) काल् पाश दोर तमि मारकांडियन ।
दर. दर. वुछित्त गोस व्याकुल मन ।
लाचार रोटुनय लिंग नालु लोलो ।
काल़ु प्वरुशु क्याजि़ ------॥

6) कालन वो'न तस व्वथ नेर वुन्य ।
प्रारब्ध चे़ सोरूय यमि विज़्यन ।
यीच़ क्याह चे' लाजिथ दरु-दरु लोलो
काल़ु प्वरुशु क्याजि़ ------॥

7) कालस वो.न तम्य चु प्रार तान्य व्वन्य ।
पूज़ा क'रिथ म्वकुलु हरु चरणन ।
अन्ध वातुनावय ब. गो.ड यि लोलो ।
काल प्वरुशु क्याजि़ ------॥

8) काल छुसन पचा़न लिंग छुन. त्रावान ।
पूज़ायि छू्यन गव शे'वनाथ प्रारान ।
त्रिलूचन गव नारानार लोलो ।
काल़ु प्वरुशु क्याजि़ ------॥

9) यि कशमकश लजि तिमन स्यठा चे़र तान्य ।
च़्यथ स्वरूप ध्यान मंज़ ओ'स बोजा़न ।
चार आस फाटवुन यि लिंग लोलो ॥
काल़ु प्वरुशु क्याजि़ ------॥

10) भक्तिभाव क्याह को'र सदा शैवन ।
लिंग फुट नोन द्राव त्रिशूल हयथ व्वन्य ।
अर्द्ध ना'रीश्वर दुदल लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याजि -----।।

11) कालस वोन तम्य अगूर प्वरुशुन ।
म्यानि पूज़ायि क्याज़ि कोरुथ चे' छ़यन ।
त्रिशूल सूत्य चटय व्वन्य ब कलु लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याजि -----।।

12) स्वरुफु ग्वसानि छुक क्युथ दयावान ।
आरचर नाद छुख दवान बोज़ान ।
वेशुनु ब्रह्म चु शीतल स्वभाव लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याजि -----।।

13) विष्णु त. ब्रह्मा चान्य असतुति करान ।
शंकर हाव असि टवखती पननि ।
अंगुष्ठमात्र होवथक रूप लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याजि -----।।

14) विष्णु भगवान चे पूज़ा करान ।
सास पम्पोश न्यथ चे पूज़ि लागान ।
ओस तस यि चोन भक्ति भाव लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याजि -----।।

15) पम्पोश ह्यथ ओस पूज़ा करन ।
सासु मंजु तस गव अख पोश कम ।
नेत्र कमल चे़ लोगुन शेरि लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याज़ि ------।।

16) प्रयानु कालु यस फोरि चोनुय नाव ।
क्याह करन अद तस धर्म तय दान ।
प्रकरथ ह्यथ सु बावान लोलो ।।
कालु प्वरुशु क्याज़ि ------।।

17) अथ दपान प्रकरथ ह्व गयि चा'न्य ज़ान ।
येमि खा'त्र व्यदुवान मारान पान ।
अज्ञान मा म्वच्यव बर लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याज़ि ------।।

18) ही दयि युस ज़ीव चे़' न्यथ स्वरी ।
सुमृनायि तस यिवान् चु अवतारी ।
कति मारि तस यम तु काल लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याज़ि ------।।

19) चतुरविंमशत् चे़' दारिथ अवतार ।
पननि यछ़ायि दितुथ ब'खत्यन तार ।
प्रारान छुय चे़' मद लाल् लोलो ।
कालु प्वरुशु क्याज़ि ------।।

भजन न० 2

ऋषि बालुक श्रवन कुमार लो लो ।
वाय ओम् क'रिथ त्रा'विन प्राण लोलो ।।

1) जंगलस मंज़ ओस सु पा'निस नेरान ।
जलाशि ओस पोन्य बरान ।
पोन्य बरनु सूत्य नटिस गुड गू गछ़ान ।
राज़ दशरथ ओस शिकार करान ।
मृग ब्राँति द्युतुन दा'रिथ कान ।
तीर लो.ग श्रवणस त्रा'वि तमि प्राण ।
नट्य शब्दस को.रुन निशान लोलो ।।
ऋषि बालुक - - - - - - - ।।

2) वाय वाय बूज़िथ छु राज़ दोरान ।
निश वा'तिथ छु बालुक वुछ़ान ।
वुछ़िथ राजु छु व्याकुल बनान ।
दशरथ राज़स आ'स्य चोर सँतान ।
मगर ब्रह्महत्या छस चो़मरान ।
तमि पापु छुनु मोकलान ।
पानस सूत्य छु व्यचा़र करान ।
दपान को'रुम पाप स्यठा महान ।
मृग भ्राँति मोरुम इन्सान लोलो ।।
ऋषि बालुक - - - - - - - - ।।

3) ऋष्य तु ऋष्य बाय ऑ'स प्रारान ।
दपान चे़र गव स्यठा आव न सोन संतान ।
को'त. सना गव सोन प्राण ।
स्यठा काल छि तिम प्रारान ।
त्रेशि म्वरव आ'स्य तडपान ।
ज़ोनुक नूर चश्मन त्रा'व्य प्राण लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

4) शूक क'रिथ गय तिम हॉ'रान ।
वोनुख भगवानु असि कडिथ चे़ प्राण ।
दशरथ राज़. ति ओस सोंचान ।
ऋषि तु ऋषि बायि आसन पा'निस प्रारान ।
पोन्य निमरव आसन तिम तडपान ।
त्रेशि त्रेशि आसन तिम करान लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

5) राज़ दशरथ छु सोंचान ।
दपान तो.त गछुन क्या गछि म्योन जान ।
वुछन येलि न तिम पनुन संतान ।
क्या वनन तिम बु गछ तति पशेमान ।
ऋष्य शापस छु खोचा़न ।
लाचार ग'छित छु पोन्य निवान ।
कुटियायि मंज़ अचा़न ।
त्रेशि नो.ट लबि कनि थवान ।
मन किन्य छु त्राहि त्राहि परान लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

6) तसन्दि अच़.नु. छु ऋष्य व्यच़ारान ।
दपान शायद आसि यि सोन संतान ।
मगर त'म्य सन्ज़ि कथि छु प्रारान ।
पो'त्र ब्रा'चं ऋष्य त'मिस प्रुछ़ान ।
श्रवण छुख कोनु. छुख वनान ।
राज़ बूज़िथ छु नाव वनन मंदछान ।
छ़व्पि तसुँज़ि छु तिमन शक गछ़ान ।
ज़ानान यि छुनु. सँतान लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

7) लाचार ग'छ़ित छु राज़ वनान ।
त्रेश कोनु. छिव. तोहि चवान ।
दो'पहस असि छु ननान च़ छुख न सोन संतान
वनन यो'द्ध च़ छुक सोन सँतान ।
अछन कोनु. छुख असि गाश अनान ।
असि छुख चु ग़ेर ज़ान ननान लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

8) ति बूज़िथ छु राजु नेरान ।
ऋष्य दीव तस शाप दिवान ।
च़े' क्याज़ि मोरुथ सोन संतान ।
बे ग्वनहन कोरुथ च़े शुमशान ।
च़ ति कोनु. छुख अछव निश गछन ।
युथय दोख. करिनय च़े ति भगवान ।
अमि शाप राज़स ती बनान लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

9) राजु येलि छु घरु वातान ।
ऋष्य शाप छु तस प्रखटान ।
केकी छु व्यडाम अचान ।
स्व छि राज़स वर मंगान ।
राज भरतस तु जंगल गछि राम ।
श्री राम छु डंडक वन नेरान ।
लक्ष्मण तु सीता तस पतु लारान ।
राजु छु विलाप करान तु पान मारान ।
वद्य वद्य छु तस ओ.न प्यवान ।
त्रेषि रोस्तुय अद राज़. ति मरान ।
अन्तरया'मी सोरुय ज़ानान लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

10) राम वन ग'छित छु राजु. मरान ।
मरिथ तस तीलस मंज़ थावान ।
क्याज़ि राम वातनस तान्य छि प्रारान ।
शयि र्ये'त्य यलि राम छुख वनान ।
दाह क्रया राज़स करनी गयि जान ।
क्याज़ि वापस म्योन युन गछि न जान ।
अदु राज़स ज़ालानु लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

11) वन. मंज़ राज़स छु दोख़ु बनान ।
रावुण छु तस ज़नान निवान ।
तति छु तमिस य्वो'द लगान ।
येमि किन्य तमिस ऋषि शाप छु प्रखटान ।
यि छु वोलमुत शाप खानदान ।
सूरज बँसी छि सा'री मरान ।
लव त क्वश शेष रोज़ानु लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

12) घर यिथ छु राम मा'लिस करुम करान ।
धर्मु वेरि छु धर्म थावान ।
धर्मस स्थापन क'रिथ छु राज करान ।
ज़न्म ह्यथ पान दो.ख तुलान ।
दो'ख बूगिथ वयकुण्ठस खसान ।
लव त क्वश छि राज करान ।
वयकुण्ठ वास पानु व्यमानस खसान ।
मदुलाल छु सोरि सामान लोलो ।।
ऋषि बालुक --------।।

भजन न० 3

हनुमान राम जामु छ़नुथ लोलो ।
भक्ति यूगुक प्रकाश होवुथ लोलो ।।

1) दशरथ राज़स न काँह सनतान आसन
अमि कामनायि सु यग्यन करन
आगिन्या वशिष्ट जियन छु पालन
यगुन्य सफल गछ़ित खो'त खीर बूज़न
आहार करुख द्यु तुख राज़ रॉनियन
बन्येयि तस चो़र सनतान लोलो ।

2) राज़ दशरथ बन्यव स्यठा प्रसन्न
आदन येलि को'र तम्य राम .दर्शन
नव वर्ष बाल लीला गयि पूर्ण
वुछ नय राम अवतार लोलो ।

3) नव वरी गछ़ित छु वशिष्ट जी यिवन
दो'पनस ही राज़ म्या'न्य व्यनती बोज़ व्यन्य
श्री राम बु पानस सॅूत्य निमन
व्यनती बूज़िथ सु तमिस कारन प्रछ़न
ग्वर दीव वन चे़ क्या प्यो'य प्रयूज़न
श्री रामस क्याज़ि छुख छ़ारन
श्री राम ग्वरु दीव ओ'नुथ लोलो ।

4) वनस मँज़ रूज़िथ छुस बु तफ साधन
राक्षस न्यथ येति छि व्यगन करन
धनुष दा'रिथ थो'व राम ग्वर दीवन
वनस मंज़ वा'तिथ छु राक्षसन गालान
वशिष्ट जी अदु तफ पूरण करान
वशिष्ट जी चे़ राम थान प्रोवुथ लोलो ।

5) मिथला दीशस मंज ओस राज़ ज़नुक रोज़ान
कन्यादान करुन ओसुन को'रमुत आरम्भ
ब'ड्य ब'ड्य राजु आ'स ओ-त वातन
मिथलेष उत्सव बूज़ वशिष्ट जियन
श्री रामस छु सॅूत्य ओ'त निवन
सभायि मंज़ छि बड्य बड्य राजु वा'तिथ आसन
श्री राम ज़न बिहिथ सिरियि चमकान
सारी राज़ छि यतन करान
मगर धनुषबान कां'सि हुन्दि छुनु वो'थान
वशिष्ट जी श्री रामस आ'ग्यना दिवान
धनुष तुल राजु ज़नुक करुन प्रसन्न
महादीवुन धनुष फुटरावुन
श्री राम धनुष बाण वुछान लोलो ।

6) वो'थ राम अदु धनुष सम्बोलुन
काण ला'गिथ धनुष दनकनोवुन
राज़ ज़नुक अद तति गव स्यठा प्रसन्न
सीता जी श्री राम चे़ वो'रुथय लोलो ।

7) विधाता राम छु यूग माया करान
सरस्वती जी केकी सोज़ान
दो'पनस मन प्राण चु फिर तस व्वन्य
केकी बवद्ध फीरिथ छि राज़स वनान
वरदान प्रोन छुम दिम मे' वुन्यक्यन
केकी चे' वरदान ज़्यूनुथ लोलो ।

8) श्री राम राज़स मन नावान
वरदान केकी दिवनावान
श्री राम पान डडकवन नेरान
बुरजु काय गंडिथ पतु लक्षमण
जानकी छख पतु लारान
तपु बल राज मूक्ष प्रोवुथ लोलो ।

9) कोलाहल वो'थ तति सूँत्य व्यगन
व्याकुल बन्येव भरत शत्रुघन्न
राम ख्राव तिम तखतस खारान
राम माया चे प्यतरा'वथो लोलो ।

10) चित्रकूट वोत राम व्वन्य
धा'रिथ मृग रूप मा'रीच आव व्वन्य
सीता दपान रामस मृग रटुन
मृग रूप राक्षसस राम पतु दोरान
सीता लक्षमण पन मा'र बनावान
मृग चलान तु राम पतु लारान
राम जुव अन्धकार वोहरथ लोलो ।

11) चेर गव स्यठा सीता लक्षमनस वनान
श्री राम आव नु केंह चु कोनु छहन वुछन
चु ति गछ़ श्री राम वुछुन
लक्षमण छु सीता यि र'ख त्रावान
र'खि न्यबर युथ नु नेरख बनि व्यघन
द्राव अदु लक्षमण छु रामस वुछन
जानकी चे़ राम प्रयूग ज़ोनुथ लोलो ।

12) लक्षमण नीरिथ छु रावुन यिवन
ब्रह्मन रूपस मंज़ ब्यख्या मंगन
सीता तस ब्यख्या ह्यथ नेरान
ख्वर पनुन छि रुखि न्यबर थावन
अमि हितु सीता निवान लोलो ।

13) रावनस मृग खग वति मेलान
ग्रद राज जटायो तस वनान
कुस छुख च़ मनुष्य दिह नवान
ग्रद्ध जटायो छु रावनस सॅूत्य लडान
दो'पनस सीता च़ त्रावुन नतु मारथ वोन्य
रावुण छु तिमन मा'रिथ च़लान
राम लक्षमण छु वापस यिवान
पन मो'र वुछिथ राम व्याकुल गछ़ान
जानकी वनस मंज़ छि छ़ारान
स्वाकार रूपस मंज़ लक्षमण वदान
गारान सु राम नारान लोलो ।

14) ग्रद जटायो छु राम मा'रिथ वुछान
राम वुछिथ वो'ननख सीता नियि रावनन
मा'रिथ असि गव आकाश्य वुफान
जटायो चे़' राम दाम लो'बुथ लोलो ।

15) वानर सुग्रीव व्वन्य रामस वुछन
व्यसमय गछ़िथ सु तस पनुन हाल बावन
श्री राम छु अद् बा'ली मारन
तस मा'रिथ सुग्रीवस राज दिवन
श्री राम वानर सो'म्बरावन
अंगद ज़ोमबवन ओ'त वातन
हनुमान जी ति अति आसन
सो'दरस तिम अदु सो'थ छी गंडन
वानरव ति राम राम पो'र लोलो।

16) श्री राम छु हनुमानस मुन्दरी दिवान
गव अद सु आका'श्य वुडान
हुनमान लंकायि मंज वातान
वुछान तस तति विभीषन
केंछ़ा सुराग ह्यथ सु तति नेरान
काहशथ पोर लंकायि वुछान
ऐश्वरी रावनॅुनय सा'र्य वुछान
रामजुव चे़ भक्ति यूग होवुथ लोलो ।

17) हनुमान बागस मंज़ फेरान
कुल्यव प्यठ नच़न तु वो'ट् दिवान
लंग लंजि फुटरिथ छु फल ख्यवन
यि वुछिथ राख्यस तस पतु दोरान
अड़यन छु मारान अड़यन गंडान
मेघनाथस ति मारान लोलो ।

18) खबर बूज़िथ को'र रावनन श्वासन
वांदुर र'टिथ मे ब्रोंठकुन अन्यतोन
येति बु पानय समझावन
यि बूज़िथ हनुमान सन्यदान खडा सपदन
व्यवाद बूज़िथ तस ताजस थफ दिवान
रावुन छु क्रूधी गछ़िथ हुकुम दिवान
वांदरस र'टिथ गछ़ि लो'ट ज़ालुन
वादुर छु काह शथ पोर लंकायि प्यठ आसन
बयकदम छु सु लंकायि बाम ज़ालन
अमि पतु छु अशोक वाटिकायि मंज़ गछ़न
ये'ति सीता छि आसान राम राम करान
हनुमान छु तस वा'ज्य त्रावन
दपान माता बु छुस राम दूत आसन
श्री राम व्यन्य पानु योर वातन
अमि पतु हनुमान लंकायि प्यठ वापस यिवन
सीतायि हुन्द सुराग रामस वनान
अशोक वाटिकायि मंज़ वदान लोलो ।

19) सुराग बूज़िथ राम लक्षमण ह्यथ नेरान
वांदर सा'री तिमन पतु दोरान
सो'दरस त'रिथ तिम लंकायि वातान
रावणस सूत्य यो'द्ध करान
यो'द्धस मंज़ लक्षमणस छु गश यिवान
हनुमान तस किछ़ सॅज़ीवन अनान
नरवस तुलिथ को'ह वुडनावान
भरत जी वुछन अख बलाया पकान
कान सॅूत्य हनुमानस को'ह ह्यथ पथर वालान
हनुमान राम राम परान लोलो ।

20) हनुमान भरत जियस मनुक भाव भावन
संज़ीवन प्रयूज़न तस बोज़नावन
भरत जी तस बे'यि वुडनावान
हनुमान श्री रामस निश वातान
लक्षमणस संज़ीवन म्वरवस त्रावान
अदु बे'यि सु ज़िन्दु गछ़ान लोलो ।

21) अदु तिम यो'द्ध वारियाह करान
क्वंब मीद्य इन्द्रजीत मारान
अहिरावण बेयि स्यठा वीर ओ'त वातान
रावणस छि अमृत क्वड़ हो'खनावान
रावणस ति राम पद दोवुथ लोलो ।

22) राम तिमन अन्तिम क्रया करनावान
रा'नियन ति राम दर्शन तारन
पतु. सीतायि अनु नावान
राज तिलक विभीषनस पानु. दीवान
वानर ति राम दाम वर प्रावान
शांती बनाविथ पो'त फेरान
पुथ्वी चे़' बार लो'च़रॉ विथ लोलो ।

23) लक्षमन सीता ह्यथ चित्रकूठ वातान
हनुमान ति सॅूत्य ह्यथ जामबवन्त
भरत जी ति छु दर्शनस तो'त वातान
शुत्रघन वशिष्ट जी सॅूत्य यिवन
अमृत छि अति यिम पानु वन्य बॉगरन
अख अकिस बरादरस नालह रटन
गम गोस. अति योर त्रावान लोलो ।

24) अति नीरिथ छि राज गदि वातान
वशिष्ट जी छु राज तिलक दिवान
श्री राम छु राज गदि प्यठ करान शासन
प्रज़ा छि आनन्द भूगन
श्री राम राज़स क्रया करुम करान
प्यन्ड त्रेश दिवान ब्रह्मनन बूज़न
राम श्राद निवारन दिवान लोलो ।

25) नाना प्रकार्य लूख सो'ख भूगन
राम राजस कूत प्रकाश आसन
मरयादा थावान मधुसूदन लोलो ।।

‘ग’ खण्ड

भजन न० 1

रंगरो रंग चोन बहानय ।
रंग वोल साहिब छु पानय ।।

1) दरकार छुनु. सामानय ।
लत लेर बेयि रंग बानय ।
पन.नि रंगची यस पहचानय ।।
रंग वोल ----------।।

2) क्या करन रंग मान मानय ।
रंग आसि यस पनुन जानयु ।
रंग वा'लिस न यह-सानय ।।
रंग वोल ----------।।

3) रंगन रंग रंगा रंग छि जानय ।
प्वखतु रंगस रंग न समानुय ।
रंगरन यि रोंगमुत अनानुय ।।
रंग वोल ----------।।

4) रंग प्रा'न्य चा़'रिथ दर मकानय ।
रंग द्युतुन सारि सामानय ।
सदा बहार तथ छि वनानय ।।
रंग वोल ----------।।

5) छो'लमुत त. फो'लमुत पानय ।
ज़ट. फलिथ रंग न रोज़ानय ।
फलिथ ज़'ट् ना'ल्य न ज़े बानय ।।
रंग वोल ----------।।

6) रंग ज़ान साहिब दर मकानय ।
असल तु वसल यकसानय ।
हा त हू नो' न छु वानु वानय ।।
रंग वोल ----------।।

7) असल गव ये'म्य बनोव जहानय ।
रंगा रंग दिवान सु पानय ।
मल रो'स ज़ट रंग रटान पानय ।।
रंग वोल ----------।।

8) इकरारि साहिब यारानय ।
रंग ना'विथ तस न फेरानय ।
रंगन मंज़ छु ख्वद रंग पानय ।।
रंग वोल ----------।।

9) ख्वद रंग रंगुर रंगन रंगानय ।
रंगन सूत्य रंग मिलवानय ।
च'न्द्र सिरियि अख बनानय ।।
रंग वोल ----------।।

10) ज़िमवार पान. नारानय ।
आ'लिम फा'ज़िल छु पूरय सामानय ।
मधुसूदन पान. रंगानय ।।
रंग वोल ----------।।

भजन न० 2

हा त हू छि बसवन्य मंज़ यमु दोरे ।
क्याज़ि रावुर ये मे' ल्वकचार ।।

1) दय नय दियि तय ड्यकि नय पूरे।
जनथ क'ड़िथ प्योम दोज़ख नार ।
द'हन हंज़ि लरि मंज़ बसुवुनि चूरे ।।

2) ड्यकु डीशिथ अद ड्यकु क्याज़ि मूरे ।
रब-उल-आलमीनस सोर यखतियार ।
दहन सूत्य चुवंजा ल'गिथ हेरु फेर ।।

3) आदन चामुत मंज़ बंद कूठरे ।
द'ह दरवाज़ु यथ स्यठाह शूबिदार ।
मल मूत्र पाक प्यल तमि मंज़ नेरे ।।

4) आमालु पनुनि पनुनि ज़ीनिथ प्रानि फेरे ।
ग्वनाहन तदोरुक बन्यव संसार ।
दुनिया फ'नाई चुवँज़ाह ह्यथ नेरे ।।

5) द'हन गाशरावान रूज़िथ पानु च़ूरे ।
कफसि नफसी गामुत्य लाचार ।
चालानु ह्यथ बिहिथ मंज़ दोज़ख दोरे ।।

6) च्यालानु पानय अदु ओरु योर फेरे ।
सूत्य ह्यथ पनुन्य यिम चुवज़ाह यार ।
ईद गाह सूय गव युस यिमन गेरे ।।

7) ईदगाह छु वसीह हर च़्ववापारे ।
च़ूर च़टल म'न्ज़्य पकान इबादत गार ।
इबादत त ग्वनाह सवाब लरि लरे ।।

8) संगत सिफत अकुलि हुन्द्य त्रे हरफ परे ।
लेखन वा'ल्य कोर त्वमहीद तयार ।
सरनामु ल्यूखुनस पीरि पैगमबरे ।।

9) परवान सुय गव युस यिम करे ।
फीरिथ छाँडे पीरि दीदार ।
पीर छि का'मिल पनुनि पनुनि हुनरे ।।

10) पीर गव संगतराश युस कन्य गरे ।
यिछ़ गरि तिछ़ रोज़ि बरकरार ।
यकरारि ताला पीरस पछ़ करे ।।

11) ईदगाह यहोय गव येति निमाज़ परे ।
हदीस कुर्बा'नी गव पीरो पुकार ।
त्रन मंज़ त्रे सजदत्रन कुनुय सो'रे ।।

12) त्रे वखुत निमाज़ परि पांछ सजुदि करे ।
शथर गलि सजदु सूत्य ठ'हरि इतबार ।
इतबार ठ'हरि चुवंजाह मारे ।।

13) चुवंजाह मा'रिथ बे'यि ज़िन्दु करे ।
नेरिहे त फेरिहे मंज़ बाज़ार ।
ज़िन्दु मरि ज़िन्दु रोज़ि ज़िन्दय फेरि हे।।

14) आवलन नीरिथ तस कायिनात मरे ।
जनत तु दोज़ख रूद नापायिदार ।
पयदार पायिदार अ'किस जायि ठहरे ।

15) हाजिर नाज़िर ज़रज़रातन फेरे ।
नाज़िर कति रूद कांसि ज़िमुवार ।
मधुसूदन व्वन्य द्वखस स्वख़ करे ।।

भजन न० 3

हे'लि द्राव पम्पोश स्वन्दर फ्वलुमुतुये ।
रमज़ान मोतये वुछमय मे' ।।

1) सुबहान अल्लाह रंग तस छो'तुये ।
नीलु रंगु जामु पम्पोश लो'तुये ।
पीरु पैग्मबर सरु मंज़ खो'तये ।।

2) आबस मंज़ छी यिथय आ'स्य तिथिये ।
शमसुल्दीन आसमान खो'तुये ।
टूरयन बिन्द म्वख तापु फलिमुतिये ।।

3) म'त्य या त'त्य छि पानु ज़ामु तिये ।
पम्बछन मंज़ द्वद च़ामुतुये ।
करीमी छि नलु प्यठु गोजि वलिमुतिये ।।

4) वथुरव सूत्य छु पम्बुछ वोलमुतुये ।
तथ्य मंज़ छु नूर पानु शोंगुमुतये ।
यहोय छु पीरव ज़हूर ज़ोनुमुतयु ।।

5) नूरस सुबहान नाव कोरुमुतुये ।
पीरु का'मिलन वुछित वोनुमुतुये ।
सिर गव यि फाश येलि सरु मंजु खोतुये ।।

6) ज़हूर येम्य वुछुये सु को'त गछि़ पो'तुये ।
पम्बुछिस गोजि मंज़ च़ामुतुये ।
आठ व'थुर पम्पोश येम्य वुछुमुतुये ।।

7) दीदार म्वय यो'त मकदुम सा'ब खो'तुये ।
च़ार हज़रतबल वोतुमुतुये ।
खानकायि मो'ला गुरिस खोतुमुतुये ।।

8) गुरिस यस नस्ति किन्य शोल द्रामुतुये ।
परव रो'.स परवाज़ कोरमुतुये ।
तति यिवान ललि वुछ यो'त वोतुमुतुये ।।

9) ललि वुछ नारु सूत्य ओस वोलुमुतुये ।
तो'न्दरस व्वठ छुनिथ खच़ पोतुये ।
वसतुर वलिथ द्रायि नारु वजि मुचुये ।।

10) नारन नार वुछ नार गव पो'तुये ।
लल-द्यदि रोय ओस मोय हो'तये ।
रंग छुख्व छो'तुये सूर मोलुमुतुये ।।

11) यारबल ब्रह्मनन वुछि नेन्द्रि ह'तिये ।
दीदार शरीफ व्वनुन खूचमुतये ।
बटु तय मुसलमान रूदि अद ततिये ।।

12) मदलाल ब्रह्मुन ब्यूठ अद त'तिये ।
ज़ियारच़न प्यठ अछन पट दिथये ।
ती करिथ ज़नमा न्यून कंरिथ त'तिये ।।

भजन न० 4

ज़ून तारकन मंज़ क्याह ज़ोतान ।
ज़ून दपान तारक छि क्याह चमकान ।
ज़ून सिरियस निश प्रकाश निवान ।।

1) आशच़र क्याह बनोवमुत छु साहिबन ।
सिरियि दिवताह छु असि तापुनावन ।
अख करान प्रकाश बे'यि दृष्टी बनान ।।

2) बाह सिरियि खसान बाहन र्‌यत्तन ।
डायि दोहह छु चन्द्रम न्यथ बदलन ।
चन्द्रमु शीतल छु सिरियि वुशुन ।।

3) साहिबो चु पानय आकाश नो'न ।
यथ प्यठ यिम त्रे'शुवय छि रोज़न ।
सिरियि छु पकान दोहस ज़ून रातन ।।

4) यिमन त्रन अ'न्द्य-अ'न्द्य छि भूमि नच़ान
छ़ल वुछत क्या अजब छु ग्रट. फेरान ।
तारक दपान युथ न अस्य प्यमव ब्वन ।।

5) भूमि छि दा'रिथ सतन सरन ।
ज़ल विष्णु छु पानु चरक़ फेरान ।
क्षीर ख्यार नामि सर आसन हेरि ब्वन ।।

6) वुछतु कोहि काफ यिम विराठ बासन ।
गिर्द त्राविथ छि आसमानस मेलान ।
फ्यरिस प्यठ वुछतु क्याह-क्याह छु नच़ान ।

7) वुछ चन्द्र शुराह कलायि परिपूर्ण ।
ओ'क़ु द्वह मावुसि ब्यन्द रोज़ान ।
ब्यन्द बड़ुनि लो'ग ज़ूनि पुनिम च़ं'दुरन ।।

8) ज़ून चन्द्रम छु गुमबद गछ़न ।
समय वोत तारकन छि गुमु गछ़न ।
सिरियि नो'न नीरिथ छि ज़ून मन्दुछान ।।

9) सिफर वुछ कोताह सो'न तु व्वगुन ।
यिमन कर्य-कर्य छुनु कांह ति ज़ानान ।
यि न्यबर वुछन छुख अन्दर ती नो'न ।।

10) अन्तर बहे छुय कुनुय बासुवुन ।
सोरुय ज़गत अथ्य मंज़ छु नच़ान ।
सिफर यि पानु गुमबद समावन ।।

11) सिरियस अन्द्य-अन्द्य छि सास किरण ।
वुछ कुस तस कुन छु अछ्यि ज़ालन ।
ति ज़ा'निथ क्याह करव ग्वनु वर्णन ।।

12) सिफर च़ मान व्वन्य सिरियि रूप नो'न ।
येलि न केंह चु वुछुथुय क्याह बासुवुन ।
आश गाश सकाश छुय प्रखटान ।।

13) ओ'न दांन्द छु तिलुवान च़कि फिरुवान ।
पट गण्डिथ मालिख छुस फिरुवान ।
अथ वनान अनि गोट त दिह भ्रमन ।।

14) रठ यि प्रमाण फेयरिस छि सिफर वनान ।
हजूमो जसामन नु केंह ति आसन ।
न. छु अथ कुनि छ्यन न छु काह च़टन ।।

15) दांन्द क्याह ज़ानि छुस फ्यरिस प्यठ नच़ान ।
तिलवोन्य दपान ब छुस यि फिरवान ।
न तमिस यड त आस न दान्द यड बरान ।।

16) यिथय पाठय संसार शिन्यस प्यठ नच़ान ।
च़राच़र ज़ीव छि दांन्दु रूप आसान ।
च़कि ग्वतान्य चे़लि ज़ीव छि फेरान रोज़ान ।।

भजन न० 5

सुबह फोल प्रभात हो आव ।
अछि पोश छाव अछि पोश छाव ।
शाह नवाज़ महफिलि च़ाव ।।

1) ज़ूनि आफताबस म्युल बन्याव ।
सियार. जालर अदु मंदुछाव ।
गाह छु बालन गाश हो आव ।।
अछि पोश छाव ------।।

2) राज़ होंज़ पान वथराव ।
पलंग बन्याव शाह हो आव ।
तखते ताऊस क्याह चमक्याव ।।
अछि पोश छाव ------।।

3) जिगर गोशस छु रमज़ान नाव ।
बोलुवुन्य तस बुलबुल त काव ।
हज़ार दास्तान पोशिनूल गाव ।।
अछि पोश छाव ------।।

4) कोतरन अदु गुर गुर करयाव ।
कुकिलव अदु गूँ गूँ वन्याव ।
आफताब द्राव त दो'ह प्योस नाव ।।
अछि पोश छाव ------।।

5) पीरि कामिलन सीर बाव्याव ।
पान शीरिथ मशीदि मंज़ चाव ।
निमाज़ि मंज़ त'मि स'जिदु दिचाव-।।
अछि पोश छाव ------।।

6) या हज़रत अथु रठ नाव ।
अमीर मुकरम पानु शाह द्राव ।
मदलालस हमस सायु त्राव ।।
अछि पोश छाव ------।।

भजन न० 6

यावन राय वस व्वन्य आय बरयो माय दम ब दम
पान रोज़न बूज़ूम दारिकाय-मन मथराय सोरवतम

1) कति लबथो कुस करि पाय ।
पाय दर रिकाब सरखम ।
व्यहरु गोमुत क्या छुम व्वपाय ।
लोल हचु चश्मु ग'यम नम ।।
यावन राय ---------।।

2) छम न खबर क्या छय चे' त्राय ।
सोखतु दिल म्योन बर दम ।
अ'रिनि रंग गोम यथ कायाय ।
ही बदनस जम जम ।।
यावन राय ----------।।

3) पय मे' सोज़तम छुख कथ शाय ।
तार पेमुच़ अज़ मदहम ।
सोज़ि दिल छुम गोमुत मे हाय ।
किथ वज़िमो ज़ीर बम ।।
यावन राय ----------।।

4) बूज़मुत छुम छुख चु हर जाय ।
पत लारनस छुम मे भ्रम ।
सा'लि ढ़ल करान छुख मंज़ नावि ।
किनु हवाई रफतम ।।
यावन राय ----------।।

5) दर ज़मीन किनु आफवाई ।
पयगाम पनुन सोज़तम ।
कोत गछ़न यिम मंज़िलस द्राय ।
पयि रोसतुय कदम कदम ।।
यावन राय ----------।।

6) दर रिकाब ओसुस अकुय पाय ।
गुर चो'लुम मे' दर लगाम ।
कदम डोलुम आमुच़ मे ग्राय ।
बेहोश प्योमुत आदम ।।
यावन राय ---------।।

7) कति छांडथ छुम न केंह आय ।
दक लदसुय फुट कदम ।
अथ.कुस रटि को'र मे वाय वाय ।
वति प्यठ छुस दर सदम ।।
यावन राय ---------।।

8) दार लज्य मुच़ मे' अशकन पाय ।
दर क्वरबा'निये सनम ।
पीर कामिलन नो'न वोन ख्वदाय ।
नूर अनवर सु द़म बदम ।।
यावन राय ---------।।

9) शाम शामस छि शामचि़ छ़ाय ।
तवय तम्य रो'ट़ सुबह दम ।
अद. वो'न त'म्य वुछ़ुम दर सराय ।
वुछान ओस तस दर बज़म ।।
यावन राय ---------।।

10) फहम दारन निश अमीर च़ाय ।
परदु च'टिथ दर नज़म ।
दूरेर च़ो'ल नज़दीक आय ।
दिल कुर्बानत कुनम ।।
यावन राय ----------।।

11) अफताब खो'त पूरय् पूरय् त्राय ।
परज़नोवुन शाम दम ।
ड्यकि शूबान ज़ूनि हुंज़ कलाय ।
वो'ज़लिस बन्योव शाम दम ।।
यावन राय ----------।।

12) दो.न हुन्दि मिलि अद रात ज़ायि ।
हयात आब गव जम जम ।
चाव दामा ननि चा'न्य प्राय ।
वुछतु गोमुत सर कलम ।।
यावन राय ----------।।

13) न छु कुनि सर न छु कुनि पाय ।
सलाम बोज़ खा'र मुकदम ।
दीदारुच़ छम दिलस ग्राय ।
मधुर प्योमुत दर कदम ।।
यावन राय ----------।।

14) सर तु पाय जोड अन्दि सोर न्याय ।
बलि दिलस सोज़ि ज़ख़्म ।
मदहम वज़ि तार गंडन. आय ।
सोज़ चलि सूत्य ज़ीरु बम ।।
यावन राय ---------।।

माधुर्य गिरा

Available at:

M/S J. K. BOOK SHOP
Street No.-1A, Talab Tilloo, Jammu

M/S VIJYESHWAR DHARMIC PUSTAK BHANDAR
Camp Road, Talab Tilloo, Jammu

M/S VEER HOUSE
Sarwal, Jammu

M/S SANJAY ELECTRONICS
I. N. A. Market, New Delhi

Published By:
VAIKUNTH PUSHP PUBLICATIONS
53-B, Tirath Nagar, Talab Tilloo, Jammu

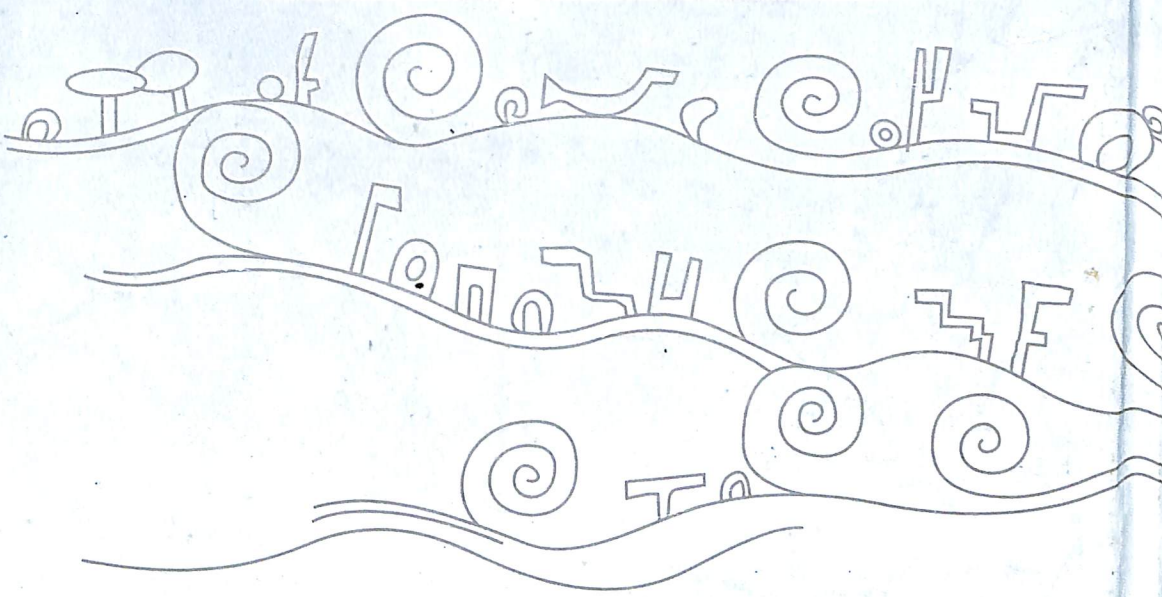

Printed By :
DURGA PRINTING PRESS
Old Janipur, Jammu. Ph.: 539863, 533456